मोहन राकेश की कहानियों के स्त्री पात्र

HIN-675 शोध प्रबंध

श्रेयांक: 16

स्नातकोत्तर कला (हिंदी)

की उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध


शोधार्थी

अमिशा आनंद गांवकर

अनुक्रमांक: 22P0140003

PR Number: 201912269

मार्गदर्शक

ममता दीपक वेर्लेकर

शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य संकाय

हिंदी अध्ययन शाखा

गोवा विश्वविद्यालय


GOA UNIVERSITY SHENOI GOEMBAB SCHOOL OF LANGUAGES & LITERATURE TALEIGAON PLATEAU

अप्रैल 2024

परीक्षक

ममता दीपक वेर्लेकर

Seal of the School

## DECLARATION BY STUDENT

I hereby declare that the data presented in this Dissertation report entitled, मोहन राकेश की कहानियों के स्त्री पात्र is based on the results of investigations carried out by me in the Discipline of Hindi at Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University under the Supervision of Ms."Mamata Deepak Verlekar" and the same has not been submitted elsewhere for the award of a degree or diploma by me. Further, I understand that Goa University or its authorities will be not be responsible for the correctness of observations/experimental or other findings given the dissertation. I hereby authorize the University authorities to upload this dissertation on the dissertation repository or anywhere else as the UGC regulations demand and make it available to any one as needed.

Amisha Anand Gaonkar

22P0140003

Date:19.04.2024

Place: Goa University

## COMPLETION CERTIFICATE

This is to certify that the dissertation मोहन राकेश की कहानियों के स्त्री पात्र is a bonafide work carried out by Ms. Amisha Anand Gaonkar under my supervision in partial fulfilment of the requirements for the award of the degree of Master of Arts in the Discipline of Hindi at the Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University.

Mamata Deepak Verlekar

Prof. Anuradha Wagle

Dean ,SGSLL,Goa University

School Stamp

Date:19.04.2024

Place: Goa University

गोंय विद्यापीठ
ताळगांव पठार,
गोंय – ४०३ २०६
फोन : +९१-८६६९६०९०४८

(Accredited by NAAC)

ATMANIRBHAR BHARAT
SWAYAMPURNA GOA

Goa University
Taleigao Plateau, Goa-403 206
Tel : +91-8669609048
Email : registrar@unigoa.ac.in
Website : www.unigoa.ac.in

Ref. No.: GU/LIB/ATTENDANCE CERT./2024/ 269

Date: 09/05/2024

**TO WHOM SO EVER IT MAY CONCERN**

This is to certify that Miss Amisha Anand Gaonkar a student of Goa University, M.A. (Hindi), visited the Goa University Library for her reference work on the following dates and completed 29 Hours & 53 Minutes of research internship as a part of her M.A. dissertation.

The detailed dates and times she visited are attached herewith.

This certificate has been issued at the written request of Assistant Professor Mamata Deepak Verlekar.

9/5/24

University Librarian
(Dr. Sandesh B. Dessai)

Dr. Sandesh B. Dessai
UNIVERSITY LIBRARIAN
Goa University
Taleigao - Goa.

GOA UNIVERSITY LIBRARY GOA

iv

## VISITS TO GOA UNIVERSITY LIBRARY

| SR.NO. | DATE | TIMING | TIME SPENT |
|---|---|---|---|
| 1. | 09/01/2024 | 12:45-12:50 | 05 mints |
| 2. | 24/01/2024 | 11:26-12:10 | 44 mints |
| 3. | 20/02/2024 | 11:00-11:05 | 5 mints |
| 4. | 28/02/2024 | 11:23-11:30 | 7 mints |
| 5. | 13/03/2024 | 11:35-12:50 | 1 hr 15 mints |
| 6. | 28/03/2024 | 10:30-12:50 | 2 hrs 2 mints |
| 7. | 04/02/2023 | 4:11-4:14 | 3 mints |
| 8. | 06/02/2023 | 10:15-11:30 | 1 hr 15 mints |
| 9. | 22/06/2023 | 3:55-5:25 | 1 hr 30 mints |
| 10. | 13/07/2023 | 3:35-4:01 | 26 mints |
| 11. | 30/09/2023 | 4:15-4:50 | 35 mints |
| 12. | 06/10/2023 | 3:22-3:25 | 3 mints |
| 13. | 14/10/2023 | 1:13-1:15 | 2 mints |
| 14. | 20/10/2023 | 3:00-3:02 | 2 mints |
| 15. | 02/11/2023 | 11:45-12:45 | 1 hr |
| 16. | 04/11/2023 | 10:36-1:00 | 3 hrs 36 mints |
| 17. | 07/11/2023 | 10:15-1:25 | 3 hrs 10 mints |
| 18. | 07/11/2023 | 2:17-6:06 | 3 hrs 49 mints |
| 19. | 08/11/2023 | 10:21-1:20 | 2 hrs 59 mints |
| 20. | 08/11/2023 | 2:10-6:02 | 3 hrs 52 mints |
| 21. | 10/11/2023 | 10:01-1:05 | 3 hrs 4mints |
| 22. | 20/11/2023 | 12:18-12:21 | 3 mints |
| 23. | 05/12/2023 | 12:54-12:56 | 2 mints |
| 24. | 12/12/2023 | 12:26-12:30 | 4 mints |
| | **Total hours** | | **29 Hours 53 Minutes** |

Signature of the Guide
(Asst. Prof. Mamata Deepak Verlekar)

Signature of the University Librarian
Dr. Sandesh B. Dessai

Signature of the Student
Miss Amisha Anand Gaonkar

# अनुक्रम


| अध्याय | विवरण | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| | **DECLARATION** | |
| | **CERTIFICATE** | |
| | अनुक्रम | iv-viii |
| | कृतज्ञता | ix |
| 1. प्रस्तावना | 1.1 शोध विषयक समस्या<br>1.2 शोध कार्य की आवश्यकता<br>1.3 भाषा और साहित्य के क्षेत्र में महत्त्व<br>1.4 प्रासंगिकता<br>1.5 अनुसंधान के उदेश्य<br>1.6 साहित्यिक पुनर्विश्लेषण<br>1.7 शोध पद्धति<br>1.8 अध्यायिकरण | 1-16 |

| | | |
|---|---|---|
| 2. रचनाकार मोहन राकेश का सामान्य परिचय | 2. मोहन राकेश का सामान्य परिचय<br>2.1 साहित्यिक योगदान<br>2.2 कहानीकार के रूप में मोहन राकेश<br>2.3 नाटककार के रूप में मोहन राकेश<br>2.4 रचनाएँ<br>2.5 मोहन राकेश की कहानियों के विषयवस्तु<br>2.6 मोहन राकेश की कहानियों में प्रयुक्त भाषा<br>2.7 शिल्पगत विविधता<br>2.8 सम्मान और पुरस्कार | 17-27 |
| 3 मोहन राकेश की कहानियों के स्त्री पात्र | 3. मोहन राकेश की कहानियों के स्त्री पात्र<br>3.1 नन्ही<br>3.2मिस पाल<br>3.3 कंबल<br>3.4 भूखे<br>3.5 आर्द्रा<br>3.6 आखिरी सामान<br>3.7 मरुस्थल | 28 -65 |

| | | |
|---|---|---|
| | **3.8 ऊर्मिल जीवन**<br><br>**3.9 रोटी**<br><br>**3.10 सुहागिने**<br><br>**3.11 नए बादल**<br><br>**3.12 सीमाएँ**<br><br>**3.13 खाली**<br><br>**3.14 एक और ज़िंदगी**<br><br>**3.15 हक हलाल**<br><br>**3.16 जानवर और जानवर**<br><br>**3.17 धुंधला द्विप,दोराहा,लक्षहीन**<br><br>**3.18 वासना की छाया में**<br><br>**3.19 मिट्टी के रंग**<br><br>**3.20 मलबे का मालिक**<br><br>**3.21 अपरिचित**<br><br>**3.22 मंदी**<br><br>**3.23 फटा हुआ जूता** | |

| | | |
|---|---|---|
| | **3.24 काला रोज़गार**<br><br>**3.25 मि.भाटिया**<br><br>**3.26 क्लेम**<br><br>**3.27 आदमी और दीवार**<br><br>**3.28 गुनाह बेलज़्ज़त**<br><br>**3.29 बस स्टैंड की एक रात**<br><br>**3.30 ग्लास टैंक**<br><br>**3.31 पांचवेमाले का फ्लैट**<br><br>**3.32 सेफ़्टी पिन**<br><br>**3.33 सोया हुआ शहर**<br><br>**3.34 फौलाद का आकाश**<br><br>**3.35 ज़ख्म**<br><br>**3.36 जंगला**<br><br>**3.37 चौगान**<br><br>**3.38 एक ठहरा हुआ चाकू**<br><br>**3.39 क्वार्टर** | |

| | | |
|---|---|---|
| | **3.40 पहचान**<br>**3.41 भिक्षु**<br>**3.42 मंदिर मंदिर की देवी**<br>**3.43 सतयुग के लोग**<br>**3.44 चाँदनी और स्याह दाग**<br>**3.45 एक घटना**<br>**3.46 बनिया बनाम इश्क़**<br>**3.47 कति हुई पतंगे**<br>**3.48 लेकिन इस तरह**<br>**3.49 गुमशुदा**<br>**3.50 अर्ध विराम** | |
| **4 मोहन राकेश की कहानियों के स्त्री पात्रों का विश्लेषण** | **4.मोहन राकेश की कहानियों के स्त्री पात्रों का विश्लेषण**<br>**4.1 स्त्री पात्र और उनकी समस्याएँ**<br>**4.1.1 पुरुष प्रधान समाज**<br>**4.1.2 अकेलेपन और आर्थिक समस्या**<br>**4.1.3 वैवाहिक जीवन में तनाव** | **66-97** |

| | | |
|---|---|---|
| 5 निष्कर्ष | निष्कर्ष | 98 -102 |
| | संदर्भ सूची | 103-106 |

## कृतज्ञता

इस शोध कार्य की सफ़लता के लिए मैं शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य संकाय, हिंदी अध्ययन शाखा के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ। मेरा मार्गदर्शन करने के लिए तथा, मुझे हमेशा प्रेरित करने के लिए मैं सहायक प्राध्यापिका ममता दीपक वेर्लेकर का विशेष आभार व्यक्त करती हूँ। उनके मार्गदर्शन के बिना यह कार्य संभव नहीं था। मैं मेरे परिवार और मित्रों का भी आभार व्यक्त करती हूँ , जिन्होंने मेरा साथ दिया ।

# प्रथम अध्याय

## प्रस्तावना

1

## प्रस्तावना

मोहन राकेश हिंदी साहित्य के उन साहित्यकारों में से एक है जिन्हें 'नयी कहानी आंदोलन' का नायक माना जाता है। हिंदी साहित्य की दुनियाँ में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वे कहानीकार,उपन्यासकार,नाटककार,निबंधकार,यात्रा वृतांतकार,डायरी लेखक,और एकांकीकार के रुप में प्रसिद्ध है। विशेष रूप से नयी कहानी की परम्परा को विकसित करने में और उसे एक नयी दिशा प्रदान करने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उनकी कहानियों में भारतीय समाज, पारिवारिक विघटन,पति- पत्नी के संबंध,अकेलेपन,अंतर्द्वंद्व आदि कई समस्याओं का चित्रण किया गया है।

मोहन राकेश की कहानियों को पहली बार मैंने बी.ए में पढ़ा था। हमारे स्नातक डिग्री के पाठ्यक्रम में 'कहानीकार का विशेष अध्ययन: मोहन राकेश' इस शीर्षक से एक विषय था, जिसमें उनके नाटक, यात्रा वृतांत, निबंध और कुछ कहानियाँ थीं। इस विषय के अंतर्गत उनकी पाँच कहानियाँ हमारे पाठ्यक्रम का हिस्सा रहीं । उन कहानियों के नाम हैं: मलबे का मालिक, उसकी रोटी, परमात्मा का कुत्ता, मवाली और एक और जिंदगी।

उस वक्त मैंने पहली बार मोहन राकेश को पढ़ा था। उनकी इन कहानियों को पढ़ने के बाद मुझे काफ़ी अच्छा लगा, ऐसे लगा जैसे यह कोई पुरानी कहानी नहीं है इसे तो हम रोज़ अपने आस- पास घटित हुआ देखते हैं। उनकी कहानियों को पढ़ते वक्त मैं एक-एक दृष्य एक – एक घटना को अपने सामने वास्तविक रूप से घटित होने की कल्पना करने लगी। उनके पात्रों की जो

भी समस्याएँ हैं, दुःख हैं , उन्हें मैं पढ़ते वक्त महसूस करने लगी थी। ‘उसकी रोटी’ नामक कहानी तो इतनी पसंद आयी कि एक तरह से वह मेरे मन को छू गई, और उसका प्रभाव अब तक मेरे मन पर है, यह कहानी चाहे किसी भी समय की हो वह एक समाज में घटित यथार्थ के रूप में आज भी प्रासंगिक है। मोहन राकेश व्दारा लिखित सभी कहानियाँ प्रासंगिकता और यथार्थ से भरी हुई है। उनकी कहानियों को पढ़ने के बाद मेरे मन में विचार आया कि यदि मैं आगे चलकर किसी विषय पर शोध करूँ या उसके बारे में कुछ जानना चाहूँ तो सबसे पहले मैं मोहन राकेश की कहानियों को ही पढूंगी,और उसी पर कुछ नई जानकारी हासिल करूँगी उनकी कहानियों के प्रति मेरे इसी लगाव के कारण मैंने मेरे शोध विषय के रूप में मोहन राकेश पर काम करने का निर्णय लिया।उनकी कहानियाँ मानव जीवन की हर समस्या का यथार्थ चित्रण प्रस्तुतकरती हैं। उन्होंने अपनी कहानियों में हर एक पात्र को महत्व दिया है,उनकी कहानियों में मध्यवर्गीय समाज के पात्रों की समस्याओं का अत्यंत सजीव और मार्मिक चित्रण दिखाई देता है। मोहन राकेश की कहानियों में तत्कालीन समय के समाज की झलक देखी जा सकती है।

समाज में कई सालों से, पीढ़ियों से महिलाओं पर अत्याचार होते चले आ रहे हैं जिसका रूप और गंभीर होता चला जा रहा है,मोहन राकेश की कहानियों के स्त्री पात्र अंतर्द्वंद्व,अकेलेपन, पितृसत्ता,पारिवारिक तनाव आदि स्थितियों से संघर्ष करती दिखाई देती है।

मोहन राकेश ने कुल 66 कहानियाँ लिखी। उनकी सभी कहानियों में स्त्री पात्र है, पर हर कहानी में स्त्री की समस्या केंद्र विषय के रूप में नहीं,पर कथा में स्त्री की भूमिका हो सकती है,जहां

वह मुख्य और गौण पात्र के रुप में होगी। उनकी ६६ कहानियों में से कुछ कहानियाँ ऐसी हैं जिनका मुख्य विषय स्त्री पात्र और उनकी समस्या है। इन सभी कहानियों में से जिन कहानियों में स्त्री केंद्रिय पात्र हैं उसपर मुख्य रूप में शोध किया जाएगा वे कहानियां निम्नलिखित हैं:

मरुस्थल,उर्मिल जीवन,सीमाएँ,'नन्ही',उसकी रोटी,भुखे,आर्द्रा,आखिरी सामान,सुहागिनें, 'मिस पाल ', खाली,अपरिचित।इसी के साथ अन्य कहानियों में जो भी स्त्री पात्र हैं उन कहानियों का भी विश्लेषण किया जाएगा।

## 1.1.शोध विषयक समस्या

इस विषय पर शोध करते वक्त कुछ समस्याओं का समाधान ढूंढना ज़रूरी होगा,जैसे मोहन राकेश की कहानियों में चित्रित स्त्री कैसी है, क्या वह शिक्षित है या नहीं, ग्रामीण स्त्री है या शहरीय स्त्री है और उन स्त्रियों को मोहन राकेश ने किस प्रकार अपनी कहानियों में दिखाया है। उसी प्रकार उन्होंने अपनी कहानियों में जो भी स्त्री समस्याएँ उठाई हैं वह समस्याएँ क्या आज भी प्रासंगिक हैं? इसपर भी विचार किया जाएगा। मोहन राकेश की कहानियों में स्त्री की संवेदनाओं को अभिव्यक्ति मिली है,इस कारण उनकी कहानियों को स्त्री संवेदनाओं की अभिव्यक्ति के रुप में देखा जा सकता है परंतु वह किस प्रकार स्त्री संवेदनाओं की अभिव्यक्ति है इसे प्रमाणित करना और उसके बारे में जानकारी देना आवश्यक है।

## 1.2.शोध कार्य की आवश्यकता

स्त्री पहले से लेकर आज तक कई विडंबनाओं से, पीड़ा,अंतर्द्वंद्व,पितृसत्ता आदि से जूंझ रही है।इनके बीच पीसती जा रही है,और अपने अस्तित्व को बचाने के लिए संघर्ष करती दिखाई दे रही है। आज इस समाज में हम देख सकते है कि स्त्री स्वतंत्र तो है पर वही स्त्री पूर्ण रूप से सुरक्षित नहीं है। हर दिन समाचार पत्र में, इंटरनेट पर, टी.वी पर हम कई समाचार सुनते हैं जैसे, किसी स्त्री का अपहरण किया गया है,किसीने आत्महत्या कर ली,किसी का बलात्कार हुआ है ,शोषण हुआ है आदि। इस तरह समाज में कई घटनाऍं घटित होती हैं जिनका शिकार एक बेकसूर स्त्री बनती है। इसलिए मेरे शोध कार्य का जो विषय है उसपर काम करना बहुत ज़रूरी है ताकि इससे पाठक स्त्री की  समस्याओं को समझ सके, लोगों को यह पता चले कि एक स्त्री किन परिस्थितियों से गुज़रती है। मोहन राकेश की कहानियों में स्त्री जीवन का भीतरी अन्वेषण दिखाई देता है, जो इस समय में भी अत्यंत महत्वपूर्ण भुमीका निभाता है। प्राचीन काल में स्त्रियाँ संस्कृति और परंपराओं के कारण हमेशा जकड़ी रही, वही आधुनिक युग में आकर भी वह किसी न किसी दबाव में जी रही है,आज सामाजिक रूढ़ियों में तो थोड़ा परिर्वतन हुआ है पर स्त्री आज भी  समाज में कई संघर्ष करती नज़र आती हैं। जिन समस्याओं का वह सामना करती है ,उनमें से कई समस्याओं को हम मोहन राकेश की कहानियों में देख सकते हैं,जैसे अंतर्द्वनद,अकेलेपन, कुंठा, निराश आदि।

## 1.3. भाषा और साहित्य के क्षेत्र में महत्त्व

भाषा और साहित्य के क्षेत्र में यह विषय अत्यंत महत्वपूर्ण है। मोहन राकेश की अधिकतर कहानियाँ स्त्री जीवन की समस्याओं से जुड़ी हुई हैं,स्त्री जीवन की मूल संवेदनाओं को उन्होंने अपनी कहानियों में अभिव्यक्त किया है। आधुनिक जीवन की विसंगतियाँ,बदलते संबंधों के कारण आया तनाव आदि की अभिव्यक्ति इन कहानियों के माध्यम से हुई है। एक स्त्री जो अपनी संवेदनाओं को पूरी तरह से अभिव्यक्त करने में भी असमर्थ रहती है उसे साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्ति मिलती है और मोहन राकेश की कहानियाँ भी इसी का उदाहरण हैं जिसका साहित्य के क्षेत्र में अत्याधिक महत्त्व है। उनकी कहानियों में,पारंपरिक स्त्री,ग्रामीण स्त्री,आधुनिकता के बीच झुलती हुई स्त्री,विधवा स्त्री,इन सबके साथ माँ, बहन, बेटी, पत्नी, प्रेमिका आदि के रूपों का प्रतिनिधत्व मिलता है।

## 1.4. प्रासंगिकता

मोहन राकेश द्वारा लिखित सभी कहानियाँ आज भी प्रासंगिक हैं। उनकी कहानियों में सभी समस्याएँ उनके परिवेश से जुड़ी यथार्थता को उजागर करती हैं। उन्होंने अपने जीवन में जो संघर्ष किए,उसी के समान कुछ परिस्थितियाँ उनकी कहानियों का हिस्सा रही हैं। राकेश ने अपनी अधिकतर कहानियों में किसी न किसी स्त्री समस्या को उठाया है,जैसे समाज में एक स्त्री आज भी कई जगहों पर पुरुष के अधीन जी रही है, ग्रामीण स्त्री और सुशिक्षित स्त्री भी पति के दबाव में

जी रही है। आज स्त्री शिक्षा के प्रति जागरूक है,पढ़ी लिखी भी है परंतु उसकी स्थिति में कोई विशेष बदलाव नहीं दिखाई देता है। थोड़ा परिवर्तन हुआ है,स्त्री अपने अधिकारों से अपने अस्मिता की पहचान से अच्छी तरह से परिचित हैं किंतु उनमें से कुछ ही स्त्रियां ऐसी हैं जो विद्रोह करती हैं,अपने स्वाभिमान को बचाने के लिए आवाज़ उठाती हैं। वही कुछ ऐसे स्त्री पात्र भी हैं, जो आर्थिक रूप से स्वतंत्र है,नोकरी करती है पर फिर भी अपने पति की इच्छा की अनुसार जीवन जीने के लिए बाध्य हैं, जैसे मोहन राकेश की 'सुहागिनें' कहानी की 'मनोरमा','आखिरी सामान' कहानी की ''बेला भण्डारी'आदि। वे पात्र पढ़े लिखे होने के बावजूद अपने ऊपर हो रहे अत्याचारों को चुपचाप सहते हैं।

स्त्री प्राचीन काल से इस समाज का महत्वपूर्ण हिस्सा रही है,परंतु भारतीय समाज में स्त्रियों की जो स्थिति है उसपर विचार विमर्श करने की जरूरत है। आधुनिक युग में महिलाओं की स्थितियों में कुछ बदलाव हुए ज़रूर हैं पर उसके बावजूद एक स्त्री को आज भी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जैसे, लैंगिक भेदभाव,घरेलू हिंसा,यौन उत्पीडन आदि। महिलाओं की सुरक्षा भी एक महत्वपूर्ण विषय है। भारत में महिलाओं के विकास को लेकर कई सकारात्मक प्रयास हो रहे हैं, जैसे स्त्री शिक्षा,स्त्री की सुरक्षा,और उसके अधिकारों को लेकर कई सारे कायदे,कानून बन गए हैं। पर फिर भी, एक स्त्री को समाज में समान रूप से सभी आधिकारों की प्राप्ति नहीं हुई है। इन वर्षों में स्त्रियों के हित के लिए काफ़ी प्रयास हो रहे हैं परंतु उसपर अभी भी विचार करने की जरूरत है। और इस प्रकार की कहानियों को पढ़ने के बाद पाठक स्त्रियों को,उनकी

परिस्थितियों को समझ पाएगा। साहित्य के क्षेत्र में ऐसी रचनाएँ बहुत महत्वपूर्ण हैं,क्योंकि इन रचनाओं के प्रभाव से समाज का स्त्रियों के प्रति जो दृष्टिकोण है उसमें कुछ परिवर्तन आने की संभावना हो सकती है। और इसी कारण से मैंने इस विषय पर काम करने का निश्चय बनाया,क्योंकि यह विषय पूर्ण रूप से प्रासंगिकता से जुड़ा हुआ है। प्राचीनकाल से स्त्री जिन परिस्थितियों का सामना करती आ रही है उसी का चित्र इन कहानियों में मिलता है और इन्हीं स्थितियों से वह आज भी गुज़रती दिखाई देती है।

## 1.5. अनुसंधान के उद्देश्य

इस विषय पर काम करते हुए सबसे पहले लेखक को जानना,उनके परिवेश को समझना महत्वपूर्ण है क्योंकि लेखक को समझने के बाद ही उनके साहित्य को अच्छे तरीके से समझा जा सकता है।इस कारण सबसे पहला उद्देश्य मोहन राकेश के व्यक्तित्व का अध्ययन करना है। उनके व्यक्तित्व के अध्यन के बाद उनके साहित्य को समझना होगा जिसे समझने के लिए उनके द्वारा लिखित कहानियों को पढ़कर उन कहानियों का विश्लेषण किया गया है। विश्लेषण के बाद शोध प्रबंध का मुख्य विषय ‘कहानियों के स्त्री पात्र’ का अध्ययन करना अगला उद्देश रहेगा, उसके बाद कहानी में चित्रित स्त्री जीवन की समस्याओं को विश्लेषित किया जाएगा और इन सभी स्त्री समस्याओं की प्रासंगिकता पर विचार किया जाएगा।

इस शोध प्रबंध के उद्देश्य निम्नलिखित हैं

i मोहन राकेश की कहानियों में चित्रित स्त्री पात्र का अध्ययन करना

ii कहानी में चित्रित स्त्री जीवन की समस्याओं का विश्लेषण करना

iii मोहन राकेश की कहानियों में चित्रित स्त्री समस्याओं की प्रासंगिकता पर विचारकरना

## 1.6. साहित्यिक पुनर्विश्लेषण

मोहन राकेश बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने अपने जीवन में जो भी अनुभव किए, जो भी उन्होंने जिया उसे अपने साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान की।मोहन राकेश के व्यक्तिव के विषय में डॉ॰ सुषमा अग्रवाल ने कहा है कि "जिजिविषा, जिन्दादिली,आत्माभिमान, दोस्ती के नाम पर सब कुछ होम कर देने की प्रवृत्ति,बाहर से कह कहे,और ठहाकों के बीच जीनेवाले और भीतर पीड़ा का संसार लिए जीनेवाले राकेश का व्यक्तित्व सागर का सा व्यक्तित्व है।"[1]

मोहन राकेश वह लेखक है जिन्होंने जीवन के यथार्थ को कहानियों का रुप दिया,'वे एक संवेदनशील कहानीकार है।' डॉ॰नामवर सिंह ने एक स्थान पर कहा है कि "अपने आस- पास के वातावरण में उजड़ती हुई कहानी को पकड़कर नि: संदेह मोहन राकेश ने उन्हे उतनी ही तेज़ी के साथ व्यक्त किया है, जो मन में एक फ्लैश की तरह कौंध जाती है।"[2]

मोहन राकेश एक सृजनशील लेखक है। उन्होंने अपने जीवन में कई संघर्ष किए हैं। परिवार का बिखराव, पारिवारिक तनाव इन सबका राकेश ने जैसा अनुभव किया है उसी अनुभवों को यथार्थ के साथ उन्होंने अपने लेखन में लाया है, जिसके माध्यम से यह पता चलता है कि मोहन राकेश का जीवन जिसप्रकार रहा उसी प्रकार की परिस्तिथियां उनके साहित्य में मिलती है। डॉ० सुषमा अग्रवाल के मतानुसार "कहने की आवश्यकता नहीं कि राकेश का लेखन उनके व्यक्तित्व उनकी परिस्थितियों और तत्कालीन स्थितियों का रेखाचित्र ही है। यों भी सर्जक को उसके साहित्य के सहारे ही जाना जा सकता है।"[3]"

मोहन राकेश ने अपनी कहानियों में स्त्री को एक विशेष रूप से देखने की आवश्यकता महसूस की। उन्होंने तत्कालीन समाज की विसंगतियों को साहित्य के माध्यम से सामने लाने का प्रयास किया है,खासकर जो समस्याएँ स्त्री जीवन से जुड़ी हुई हैं। जीवन के विविध आयामों की खोज उनके साहित्य का हिस्सा बनी दिखाई देती है,जिससे यह पता चलता है कि मोहन राकेश की पहचान उनके साहित्य से ही हो सकती है। डॉ०चमनलाल गुप्ता ने एक जगह लिखा है "राकेश का जीवन एक खुली किताब की तरह रहा है,उसने जो कुछ लिखा और किया उसे दुनिया परिचित है, और उसने जो कुछ जिया और सहा उसका आभास उनकी डायरियों और संस्मरणों में मिल सकता है।" "[4]"

मोहन राकेश की कहानियों पर डॉ०लक्ष्मी शर्मा ने टिप्पणी की है "राकेश के समस्त पात्र अत्यधिक संवेदनशील है।....... राकेश के समस्त पात्र समसामयिक अस्थिर भारतीय परिवेश

से जूझ रहे वो पात्र हैं जो इयत्ता- संघर्ष एवं अस्मि- संकट में स्वयं की चेतना को बाधित पाकर अंतर्मुखी हो उठे हैं, आत्म- संकुलन उदासी से भर उठे हैं।"[5]" इससे यह और अधिक स्पष्ट होता है कि राकेश के निजी व्यक्तित्व से उनके पात्र प्रभावित हुए हैं।

मोहन राकेश की कहानियों पर कई शोध प्रबंध लिखे गए हैं, अत्यधिक मात्रा में साहित्यिक रचनाएं भी प्राप्त हैं। परंतु उनकी कहानियों को लेकर और भी काम किया जा सकता है। जैसे उनकी कहानियों में चित्रित स्त्री पात्र पर ध्यान दिया जाए तो उनकी स्त्री पात्रों की संवेदना को लेकर उनका विश्लेषण भी किया गया है, किंतु उनकी सभी कहानियों में जो स्त्री पात्र गौण रूप में आए हैंउनको कही छोड़ा गया है।कई कहानियों में गौण पात्रों की भूमिका,उसकी समस्या को लेकर कम विश्लेषण प्राप्त हैं। मोहन राकेश की जिन कहानियों में स्त्री मुख्य पात्र के रूप में आई है उन्हीं कहानियों पर ज़्यादाशोध हुए हैं,इसलिए भविष्य में यदि शोधार्थी इस विषय को लेकर शोध करना चाहते हैं तो उनकी कहानियों में जो भी मुख्य तथा गौण स्त्री पात्र आए हैं उनकी भूमिका के महत्त्व को विस्तार से विश्लेषित कर सकते हैं।

## 1.7.शोध पद्धति

मोहन राकेश की कहानियों में स्त्री पात्र इस विषय पर काम करने के लिए मैंने कुछ किताबों को पढ़ा,मोहन राकेश की कहानियों से संबंधित प्रकाशित शोध प्रबंध, आलेख आदि का अध्ययन किया । उनकी कहानियों को लेकर काफ़ीसारे शोध प्रबंध पहले से लिखे गए हैं,जहांपर

उनकी कहानियों में चित्रित स्त्री पुरूष संबंध,आर्थिक स्थिति से झूंझते हुए स्त्री चरित्र आदि को लेकर काफ़ीसाहित्य मिलता है।

मोहन राकेश की कहानियों के स्त्री पात्र इस विषय पर शोध कार्य करने के लिए शोध पाठ विश्लेषण की पद्धति अपनाई गई है। इस पर काम करने के लिए जयदेव तनेजा द्वारा संपादित मोहन राकेश की रचनावली में से दो किताबों का आधार लिया गया है:- मोहन राकेश की रचनावली खंड दो और मोहन राकेश की रचनावली खण्ड पाँच,उसी के साथ कुछ आलोचनात्मक सामग्री जैसे लेख,किताबें,अंतरजाल पर उपलब्ध शोध ग्रंथ आदि तथा समीक्षात्मक किताबों का आधार भी लिया गया है। तथा अंतरजाल पर उपलब्ध मोहन राकेश की कहानियों की संबंध में उपलब्ध सामग्री की सहायता ली गई है ।

## 1.8. अध्यायिकरण

1.प्रथम अध्याय- प्रस्तावना

प्रथम अध्याय प्रस्तावना है, जहां शोध प्रबंध के विषय से जुड़ी हुई जो भी बातें हैं उनपर ध्यान केंद्रित किया गया है। शोध प्रबंध के लेखन में कौन कौनसे विषय आयेंगे,किसप्रकार से लेखन किया गया हैं , इस शोध प्रबंध के उद्देश्य, समस्या आदि बातों पर प्रस्तावना के अध्याय में संक्षिप्त रुप में जानकारी दी गई है।

2.द्वितीय अध्याय – मोहन राकेश का सामान्य परिचय

द्वितीय अध्याय में मोहन राकेश का सामान्य परिचय पर किया गया है । मोहन राकेश के बारे में पढ़ने के बाद क्या जानकारी प्राप्त की,उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को लेकर क्या समझा,उनके लेखन की जो विशेषतायें रही है,जो विषय रहे हैं इसपर भी विचार किया गया है।

3.तृतिय अध्याय -मोहन राकेश की कहानियों में स्त्री पात्र

तृतिय अध्याय में मोहन राकेश की कहानियों के स्त्री पात्रों पर विचार किया गया है,कहानियों में चित्रित स्त्री पात्र कैसे है? जैसे उनकी कहानियों के कुछ स्त्री पात्र अकेलेपन में जी रहे हैं, निराश है, ग्रामीण जीवन जीने वाले है,वही उनकी कुछ कहानियों की स्त्रियां सुशिक्षित है कुछ अशिक्षित हैं और यह सभी पात्र किस परिवेश से हैं इसपर बात की गई है।

4. चतुर्थ अध्याय – मोहन राकेश की कहानियों में स्त्री समस्या

कहानियों में जो भी स्त्री पात्र हैं वह कई सारी परिस्थितियों से गुजर रही हैं,अपने जीवन में आई समस्याओं से संघर्ष कर रहे हैं । इन पात्रों की विभिन्न परेशानियां है जो हमें कहानियों को पढ़ते हुए दिखाई देती हैं उनका विश्लेषण इस अध्याय में किया गया है।

5. पंचम अध्याय -निष्कर्ष

पंचम अध्याय में मोहन राकेश की कहानियों को पढ़कर जो समझा,जो नई जानकारी हासिल की इसपर टिपण्णी लिखी गई है । इस पूरे शोध प्रबंध को लिखते वक्त जो निष्कर्ष प्राप्त हुए , और जिस विषय पर काम किया जा रहा है उसके महत्व और प्रवृतियों पर बात की गई है।

## संदर्भ सूची

### आधार ग्रंथ

1.सं०जयदेव तनेजा, मोहन राकेश रचनावली खण्ड दो, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली,२०११

2. सं. जयदेव तनेजा, मोहन राकेश रचनावली खण्ड पाँच, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली,२०११

### सहायक ग्रंथ

1.डॉ.सुषमा अग्रवाल, मोहन राकेश व्यक्तित्व और कृतित्व,पंचशील प्रकाशन,१९८६

2. हेमलता, नई कहानी की सरंचना , वंदना बुक एजेंसी (किताबघर प्रकाशन का उपक्रम), प्रीत विहार, दिल्ली,२०१३

### अंतरजाल

1.प्रा० रावसाहेब मोहनराव जाधव (पी. एच. डी थिसिस )मोहन राकेश की कहानियों में नारी चरित्रों की मूल संवेदना, स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, नांदेड़ , जून 2001

2. के. फूल्लोना देवी (पी०एच०डी थिसिस)हिंदी नई कहानी के परिप्रेक्ष्य में मोहन राकेश की कहानियों का अध्ययन, मणिपुर विश्वविद्यालय,2009

3.अजय कुमार सिंह, इवनिंग कॉलेज , मोहन राकेश की कहानियाँ- एक विश्लेषणात्मक अध्ययनhttps://www.jetir.org/papers/JETIR2011124.pdf

4.डॉ०ज्योत्सना, कहानीकार मोहन राकेश की कहानियों में चित्रित स्त्री, किशन लाल पब्लिक कॉलेज, रेवाड़ी (हरियाणा)

5.https://timesofindia.indiatimes.com/readersblog/lawpedia/status-of-women-in-india-51422/

6.https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/150018

7.http://shodhvarta.in/index.php/SVJ/article/view/31/31

8.गूगल स्कॉलर https://g.co/kgs/5TXeP5

9.https://m.bharatdiscovery.org/india/%E0%A4%AE%E0%A5%8B%E0%A4%B9%E0%A4%A8_%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%95%E0%A5%87%E0%A4%B6

10.https://groups.google.com/g/roz-ek-sher/c/RT6G_MZW2kI?pli=1

11.https://mycoaching.in/mohan-rakesh

12.https://leverageedu.com/blog/hi/mohan-rakesh-ka-jivan-parichay/

# द्वितीय अध्याय

# मोहन राकेश का सामान्य परिचय

17

## द्वितीय अध्याय

## मोहन राकेश का सामान्य परिचय

मोहन राकेश का जन्म 8 जनवरी 1925 को अमृतसर- पंजाब में एक सामान्य परिवार में हुआ। मोहन राकेश के माता पिता धार्मिक संस्कारों को मानते थे , उनके पिताजी पेशे से वकील थे परंतु साहित्य में भी उनकी विषेश रुचि थी। और यही संस्कार मोहन राकेश को प्राप्त थे । मोहन राकेश की सोलह वर्ष की आयु के समय ही उनके पिताजी की मृत्यू हुई , इस कारण छोटी उम्र में ही परिवार की जिम्मेदारी उनके कंधों पर आ पड़ी। अल्प- आयु से ही उन्होंने कई संघर्षों से भरे वातावरण में अपनी ज़िंदगी गुज़ारी और इन्हीं परिस्थितियों का असर उनके व्यक्तित्व पर रहा है।

मोहन राकेश के घर की आर्थिक स्थिति काफ़ी नाजुक थी। उनके पिता हमेशा कर्ज लेते रहते जिसके कारण उनका परिवार हमेशा कर्जों से ग्रस्त रहता था। पिता की मृत्यु के बाद इन परिवार की जिम्मेदारी राकेश के कंधो पर आ पड़ी, उन्होंने कई संघर्ष किए और इस प्रकार के परिवेश में बढ़ते हुए उन्होंने जीवन की सभी कठिनाईयों का, दुःख, द्वंद्व का सामना किया और अपने इन्हीं अनुभवों को अपने लेखन का माध्यम बनाया। उन्होंने बचपन से लेकर बडे होते वक्त जो कुछ भी जिया उसी को अपने लेखन का आधार बनाया।

मोहन राकेश को अपने बचपन से चले आ रहे संघर्षमय जीवन में हमेशा एक 'घर' की तलाश थी ,उन्हें एक सूखी परिवार की खोज थी , जो अनिता के उनके जीवन में पत्नी के रूप में आने से पूर्ण हुई। अनिता के साथ उन्होंने अपना खुशियों से भरा सूखी जीवन अंतिम सांस तक जिया।

मोहन राकेश ने विभिन्न स्थानों पर नौकरियाँ की परंतु उसके बाद उन्होंने अपनी अंतिम सास तक स्वतंत्र लेखन का कार्य किया और यही उनकी आर्थिक स्थिति को सुधारने का और जीविकोपार्जन का साधन बना।

## 2.1 साहित्यिक योगदान

मोहन राकेश एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। हिंदी साहित्य में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने नाटक, कहानी, उपन्यास,निबंध, संस्मरण, यात्रा वृतांत जैसी कई विधाओं में लेखन कार्य किया है। उन्हें सर्वाधिक ख्याति एक नाटककार के रूप में मिली है। चंद्रकांता बंसल ने मोहन राकेश के बारे में कहा है कि "एक पाठक जिसने प्रेमचंद को पढ़ा और पसंद किया हो यशपाल को सहज ही स्वीकार कर लेगा और मोहन राकेश तक आते आते उन्हें एक विकास यात्रा का अनुभव तो होगा, लेकिन ऐसा नहीं लगेगा कि कही कुछ छूट या टूट गया हो। "[1]" इससे मोहन राकेश के व्यक्तित्व और उनकी प्रतिभा के साफ़ दर्शन होते हैं।

## 2.2 कहानीकार के रूप में मोहन राकेश

मोहन राकेश को कथा साहित्यकार के रूप में काफ़ीप्रसिद्धि और सफलता भी प्राप्त हुई। उनके कथा साहित्य लेखन की शुरुआत स्वातंत्रयोत्तर काल से मानी जाती है। मोहन राकेश नई कहानी आंदोलन के प्रमूख आधार स्तंभों में से एक है। उन्होंने कहानी विधा को एक नया रूप और नई दिशा प्रदान की।मोहन राकेश ने अपनी कहानियों में युगीन यथार्थ को दर्शाया है, उनकी कहानियों में मध्यवर्गीय समाज का यथार्थ चित्रण मिलता है, उनकी कहानियों में पात्रों के अंतर्द्वंद्व और अकेलेपन का बहुत ही सजीव और मार्मिक चित्रण है। मोहन राकेश की कहानियाँ विशेष रूप में स्त्री-पुरूष संबंध , स्त्री स्वातंत्र्य, वैवाहिक जीवन में उत्पन्न तनाव की स्तिथि आदि पर आधारित हैं। उदाहरण के लिए उनके द्वारा लिखित, सुहागिनें, उसकी रोटी, 'मिस पाल ', खाली आदि कहानियाँ हैं।मोहन राकेश की कहानियों का केन्द्र केवल व्यक्ति नहीं हैं बल्कि तमाम समाजिक स्थितियाँ और परिवेश है जो उनके पात्रों के जीवन में उत्पन्न तनाव, और परिस्थितियों का कारण है, और इन्हीं सामाजिक और समकालीन परिस्थितियों का मोहन राकेश की कहानियों में यथार्थ रूप से चित्रण हुआ है।

## 2.3 नाटककार के रूप में मोहन राकेश

हिंदी साहित्य में मोहन राकेश की विशेष भूमिका रही है , हिंदी साहित्य की सभी विधाओं में उनका महत्वपूर्ण योगदान है। मोहन राकेश के पूर्व नाटक मनोरंजन के रूप में देखा जाता था, उनके आगमन से हिंदी नाट्य साहित्य को लेकर रंगमंच की दृष्टि में भी परिवर्तन आया, नाटक

को उन्होंने नई दिशा प्रदान की। हिंदी साहित्य में भारतेंदु हरिश्चंद्र और प्रसाद के बाद का दौर मोहन राकेश का दौर है। आधुनिक नाटक के विकास में मोहन राकेश का महत्त्वपूर्ण स्थान है। राकेश की सबसे बड़ी उपलब्धि उनके द्वारा लिखित सन् 1958 में प्रकाशित 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक है। इस नाटक के प्रकाशन के एक साल बाद सन् 1959 में उसे वर्ष का सर्वश्रेष्ठ नाटक होने के कारण 'संगीत नाटक अकादमी' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 'आषाढ़ का एक दिन' यह नाटक महाकवि 'कालिदास' के निजी जीवन पर आधारित है। मोहन राकेश द्वारा लिखित अन्य नाटकों के नाम , आधे अधूरे, लहरों के राजहंस आदि हैं।

मोहन राकेश को सबसे पहले कहानीकार के रूप में काफ़ी प्रसिद्धि मिली उसके बाद उन्हें एक प्रसिद्ध नाटककार का दर्जा भी प्राप्त हुआ। कहानी और नाटक के साथ उपन्यास, निबंध, यात्रा वृतांत,आत्मकथा, संस्मरण, डायरी, अनुवाद आदि विधाओं में भी उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

## 2.4 रचनाएँ

### कहानी संग्रह

1.इनसान के खंडहर- 19502.नए बादल – 19573.जानवर और जानवर – 1958

4. एक और जिंदगी – 19615) फौलाद  का आकाश – 1966

**नाटक**

1.आषाढ़ का एक दिन- 19582.लहरों के राजहंस -19633. आधे अधूरे- 19694. पैर तले की ज़मीन –

**उपन्यास**

1.अंधेरे बंद कमरे – 19612. न  आने वाला कल – 19683. अंतराल – 1972

मोहन राकेश ने नाटक, कहानी, उपन्यास इन विधाओं के साथ अन्य विधाओं में भी साहित्य की रचना की है। उन्होंने निबंध, समीक्षा, रेखाचित्र ,संस्मरण, डायरी, जिवनी, यात्रा वृतांत, अनुवाद आदी की रचना भी की  हैं।

**निबंध**

1.हिंदी कथा- साहित्य: नवीन प्रवृत्तियाँ 2.आज की कहानी के प्रेरणास्त्रोत

3.कहानी क्यों लिखता हूं 4.समकालीन हिंदी कहानी:एक परिचर्चा

5. नाटककार और रंगमंच 6. रंगमंच और शब्द 7.हिंदी रंगमंच

**यात्रा वृतांत**

1.आखिरी चट्टान तक

## डायरी

1. डायरी(मोहन राकेश)

मोहन राकेश के साहित्य के माध्यम से ही उनके व्यक्तित्व और कृतित्व का साफ़ रूप देखा जा सकता है। उन्होंने अपने जीवन में जो भी अनुभव किए, जो संघर्ष किया उसी को अपने साहित्य में शब्दों के रूप में उ'तारा ' उन्होंने जो कुछ भी लिखा उसमें एक प्रतिभाशील और महान रचनाकार की सृजनशीलता और व्यक्तित्व के सभी गुण पाए जाते हैं। अपनी रचनाओं के माध्यम से मोहन राकेश ने व्यक्ति जीवनको, सूक्ष्म रूप से उसमें छिपी उन बातों को पाठकों के सामने लाया हैं जो बातें कई बार व्यक्ति मन के भीतर दबी और अनकही रह जाती हैं।

मोहन राकेश की ज्यादातर कहानियाँ मध्यमर्गीय जीवन पर आधारित हैं, उनकी कहानियों में मध्य वर्ग के हर एक पात्र और हर एक क्षेत्र की अभिव्यक्ति व्याप्त है। उन्होंने अपनी रचनाओं में सभी पात्र अपने आस पास के परिवेश से ही लिए हैं, काल्पनिक पात्रों की संख्या उनके साहित्य में बहुत ही कम होगी। उन्होंने अपनी रचनाओं में परिस्थितियों के अनुकुल पात्रों को चुना है और पात्रों के अनुकूल भाषा का प्रयोग किया है। अपनी कहानियों में उन्होंने सरल भाषा का प्रयोग किया है जो आसानी से पाठक के समझ आती हैं और पाठक उनकी कहानियों को खुदसे जोड़ सकता है और इससे पाठक के जीवन को एक नवीन दिशा की प्राप्ति भी होने की संभावना है।

मोहन राकेश के व्यक्तित्व पर समकालीन महान प्रतिभाओं का प्रभाव रहा है। मोहन राकेश को नई कहानी के शुरुवाती दौर के प्रमुख लेखकों में से एक माना जाता है। वह समय आज़ादी के बाद का समय रहा है, उससे पूर्व वे प्रेमचंद जी से भी काफ़ी प्रभावित रहे है। नई कहानी के दौर में मोहन राकेश, कमलेश्वर और राजेंद्र यादव को सर्वश्रेष्ठ माना जाता हैं। इन्हीं सभी का प्रभाव राकेश पर रहा है। मोहन राकेश का साहित्य विधा में काफ़ी योगदान रहा है, उन्हें साहित्य के हर क्षेत्र में विषेश ख्याति भी प्राप्त है परंतु सबसे ज़्यादाउन्हें एक प्रसिद्ध कहानीकार और नाटककार के रूप में देखा जाता है, उनपर कहानी के क्षेत्र में जिसप्रकार अन्य प्रतिभाओं का प्रभाव रहा है उसी प्रकार नाटक विधा में कार्य करते वक्त उनपर उनके पूर्ववर्ती नाटककारों का प्रभाव भी पाया जाता है। उन नाटककारों में लक्ष्मीनारायण लाल, जगदीशचंद्र माथुर, उपेंद्रनाथ अश्क, धर्मवीर भारती आदि के नाम पाए जाते हैं।

## 2.5 मोहन राकेश की कहानियों के विषयवस्तु

मोहन राकेश को नई कहानीकार के प्रमुख लेखकों में से एक माना जाता है।उनकी कहानियों में भारत के विभाजन के दौरान भारतीय समाज के लोगों के जीवन में जो परिवर्तन हुए उनका चित्रण मिलता है, भारतीय विभाजन को लेकर लोगों ने जो सपने देखे थे उनका मोहभंग हो गया, और इसका शिकार बना मध्यवर्गीय परिवार। मध्यवर्गीय व्यक्ति की सभी आशाएं टूट गई, व्यक्ति अकेलेपन में जीने के लिए मजबूर हो गया, मध्यवर्गीय परिवार में संबंध टूटने लगे,

पति-पत्नी के बिच अलगावहोने लगे, व्यक्ति मन की घुटन बढ़ती गई, और इन्हीं स्थितियों को मोहन राकेश ने अपनी कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत किया हैं।

## 2.6 मोहन राकेश की कहानियों में प्रयुक्त भाषा

मोहन राकेश ने अपनी कहानियों में सहज और सरल भाषा का प्रयोग किया है। उनकी कहानियों की भाषा सामन्य जनता की बोलचाल की भाषा से संबंधित है जिससे पाठक को पढ़ने में आसानी होती है और वह उनके शब्दों में इतना बह जाता है कि खुदके जीवन से सबंधित घटनाओं को वह उनकी कहानियों में यथार्थ रूप से

चित्रित पाता है। हर पाठक जो भी मोहन राकेश की कहानियों को पढ़ता है वह अपने खुदके मन की अभिव्यक्ति को उनके शब्दों में व्यक्त पाता है, जिस कारण उनकी कहानियों से सभी गहराई के साथ जुड़े महसूस करते हैं। मोहन राकेश की भाषा विषय और पात्रों के अनुकुल है, खड़ी बोली हिंदी, उर्दू, अंग्रेज़ी आदि भाषाओं के शब्द उनके लेखन में पाए जाते हैं।

## 2.7 शिल्पगत विविधता

मोहन राकेश ने अपने साहित्य लेखन में हर विधा में लेखन किया है, उनकी रचनाओं के जो विषय रहे हैं उनमें उन्होंने विषय के अनुरूप ही शिल्प का चुनाव किया है। उन्होंने अपने साहित्य सृजन में विविध शैलियों का प्रयोग किया हैं जैसे, वर्णनात्मक शैली,भावात्मक शैली, चित्रात्मक शैली। वे अपनी कहानियों में किसी भी घटना का अत्यंत सजीव और यथार्थ वर्णन

करते हैं जिस कारण पाठक भी उनकी रचनाओं की और आकर्षित होते हैं और वह रचना उनके लिए इतनी प्रभावपूर्ण बन जाती है कि उन्हें पढ़ते वक्त पाठक उन घटनाओं के चित्र को अपने आंखों के सामने घटित होने का एहसास करने लगते हैं। और यह उनकी शैलीगत विशेषताओं के कारण ही संभव हो पाता है।

## 2.8 सम्मान और पुरस्कार

मोहन राकेश को सन् 1959 में ' आषाढ़ का एक दिन' नाटक के लिए सर्वश्रेष्ठ नाटक होने के कारण 'संगीत नाटक अकादमी' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सन् 1971 में उन्हें 'संगीत नाटक अकादमी' द्वारा उनके नाट्य साहित्य के लिए 'नाट्य लेखन पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।और सन् 1971में ही उन्हें नाट्य शोध के लिए 'नेहरू फैलोशिप' भी प्राप्त हुई थी।

## संदर्भ ग्रंथ सूची

सहायक ग्रंथ

1.1. चंद्रकांता बंसल- सातवे दशक की कहानी में मानवीय संबंध-पृ. 82

2. डॉ०सुषमा अग्रवाल, मोहन राकेश का व्यक्तिव और कृतित्व, पंचशील प्रकाशन,1986

शोध प्रबंध (पी०एच०डी) थिसिस

1. के. फूल्लोना देवी (पी०एच०डी थिसिस)हिंदी नई कहानी के परिप्रेक्ष्य में मोहन राकेश की कहानियों का अध्ययन, मणिपुर विश्वविद्यालय,2009

**अंतरजाल**

1.https://m.bharatdiscovery.org/india/%E0%A4%AE%E0%A5%8B%E0%A4%B9%E0%A4%A8_%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%95%E0%A5%87%E0%A4%B6

2.https://groups.google.com/g/roz-ek-sher/c/RT6G_MZW2kI?pli=1

3.https://mycoaching.in/mohan-rakesh

4.https://leverageedu.com/blog/hi/mohan-rakesh-ka-jivan-parichay/

## तृतिय अध्याय

## मोहन राकेश की कहानियों के स्त्री पात्र

## मोहन राकेश की कहानियों के स्त्री पात्र

## 3.1 ''नन्ही''

**पात्र – 'नन्ही','युवती'**

'नन्ही' इस कहानी की मुख्य पात्र है। ''नन्ही'' कहानी में लेखक ने 'युवती' की भावनाओं का और उसके द्वंद्व का अत्यंत मार्मिक चित्रण किया है। ''नन्ही'' अपनी मॉं की मृत्यू के बाद मॉं की तलाश में होती है। उसे मॉं क्या है, कैसी होती है इसका कुछ भी पता नहीं होता, उसके लिए मॉं एक अस्पष्ट रेखा जैसी है। अपनी मॉं की मृत्यु के बाद वह अपनी दादी के पास ही रहती है।

दूसरी ओर यह उस नवयौवन 'युवती' की कहानी है जिसने बचपन से अभी यौवन के दरवाजे पर पैर रखा ही था कि उसका विवाह किया जाता है। जिसने अभी अभी खेलना बंद किया होता है उसका जीवन एक झटके में पूरा बदल जाता है। वह अपनी मॉं की आवाज़ सुनना चाहती है, वह चाहती है कि वह उसे बुलाए पर वहां पर वहां पर सब कुछ उससे विपरित होता है। उसका विवाह जिस व्यक्ति से किया जाता है उसकी वह दूसरी शादी होती है और उसकी एक बेटी भी होती है जो 'बहु' को मॉं कहकर पुकारती है, पर वह उसे स्वीकार नहीं कर पाती क्योंकि उसके लिए वह सब कुछ नया होता है। वह आज तक बेटी सुनती आई थी वह अब मॉं सुनने के बाद चौक जाती है। वह बेटी से कब मॉं बन जाती है यह उसे पता भी नहीं चलता। यहएक साथ दो बेटियों की कहानी है, दोनों बेटियों को मॉं के प्यार की ज़रूरत होती है। एक बेटी को यह तक पता नहीं होता है कि मॉं क्या है, पर उसे मॉं स्वीकार्य है चाहे वह कैसी भी हो। दूसरी बेटी को मॉं क्या

है यह पता तो होता है परंतु जब उसपर मॉ बनने की बात आती है तब उसे वह स्वीकार नहीं कर पाती क्योंकि उसके लिए यह सब आकस्मिक होता है जिसकी उसने शायद कल्पना भी न की होगी।

**3.2'मिस पाल '**

**पात्र – 'मिस पाल '**

'मिस पाल ' इस कहानी की प्रमुख पात्र है।"यह एक ऐसी कहानी है जिसमें आर्थिक संकटों का सामना करनेवाली और वर्तमान युग के दबाव तथा आवश्यकता के अनुकूल जीवन गुज़ारनेवाली अविवाहित स्त्री की समस्याओं को अभिव्यक्ति मिली है। "[1]"'मिस पाल ' एक सुशिक्षित स्त्री है,जो खुद को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाने के लिए नौकरी करती है। वह जहां नौकरी के लिए जाती है वहां पर  काम करने वाले पुरुष उसके शरीर को ग़लत नज़र से देखते हैं, उसपर कॉमेंट्स करते हैं, जिस कारण उसका मन हमेशा निराश रहता है। 'मिस पाल ' बचपन से ही खुद को असुरक्षित महसूस करती है। वह ऑफिस के लोगों का उसके प्रति देखने के दृष्टिकोण के कारण खुद को उनसे दूर रखना चाहती है, इसलिए वह नौकरी छोड़कर चली जाती है। उसे लगता है कि वहां जाने के बाद वह स्वतंत्र होगी, पर वहाँ जाकर भी उसकी ऊब बढ़ती चली जाती है, वह खुद को अकेला पाती है। उसका जीवन बचपन से अकेलेपन में ही बीता है। और आगे चलकर आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के बावजूद उसके जीवन का जोखालीपन है वह भर नहीं पाता, दिन ब खुद उसकी घूटन बढती जाती है और इस कारण वह खुद को अकेला, निराश

और उदास पाती है। इस कहानी में महानगरीय जीवन में अकेलेपन की त्रासदी का सूक्ष्म चित्रण मिलता है।

**3.3 कंबल**

**पात्र – 'बनारसी '**

यह शरणार्थी कैंप में रहनेवाले एक परिवार की कहानी है। जिसमें मॉं, बाप, भाई और बहन रहते हैं।थंड के दिन होने के कारण सरकार में कैंप के लोगों को कंबल बाटी जाती है। 'बनारसी ' इस कहानी में गौण पात्र के रूप में है परंतु उसपर किया जानेवाला शोषण इस कहानी का केंद्र विषय रहा है। शरणार्थी कैंप में सहायता के नाम पर किस प्रकार  जनता का शोषण किया जाता है, खासकर स्त्रियों का यह इस कहानी में 'बनारसी ' के माध्यम से दिखाने का प्रयास किया है। कंबल बॉंटने आनेवाले कंबल बॉंटते वक्त सोई हुई युवतियों के शरीर को भी छूते हैं, उनका शोषण करते है, पर सब जानते हुए परिस्थिति के आगे विवश होकर स्त्रियॉं चुपचाप सब सहन करने पर मजबूर हो जाती हैं। उन्हें थंड से बचना है इस कारण वह खुदपर हो रहे अत्याचारों की भी उपेक्षा करतीं हैं। डॉ०सुषमा अग्रवाल ने लिखा है, "रात की ठंडक में कुछ लोग 'बनारसी ' पर कंबल डाल जाते हैं। नींद के अभिनय में उसने जाँघ और छातियों पर कंबल डालने वालों के स्पर्श की भी उपेक्षा कर दी। "[2]"इस वाक्य से 'बनारसी ' पर हो रहे शोषण का साफ़ पता चलता है।

## 3.4 भुखे

**पात्र –'एवलिन वार्कर'**

भुखे कहानी की मुख्य पात्र 'एवलिन 'वार्कर है। यह एक ऐसी स्त्री की कहानी है जो अपने पति के गुज़र जाने के बाद अपने जीवन में आर्थिक स्थिति के साथ समाज में अन्य कई स्थितियों से संघर्ष करती नज़र आती है। 'एवलिन 'अंग्रेज़ होने के बावजूद एक पंजाबी युवक से शादी कर लेती है, परंतु टी. बी के कारण उसके पति की मृत्यु हो जाती है। पति की मृत्यु के बाद वह अकेली पड़ जाती है, उसे कई संकटों के सामना करना पड़ता है। समाज के पुरुष पति की मृत्यु के बाद उसे वासना भरी दृष्टि से देखने लगते हैं , जब 'एवलिन 'अपने पति द्वारा बनाई गई पेंटिंग्स बेचकर पैसा कमाने का प्रयास करती है,तब भी लोग उसके शरीर पर नज़र डालते है, परंतु वह हर हाल में अपना सम्मान बचाए रखती है। इस कहानी में समाज में विधवा स्त्री का जीवन कई आभावों और समस्याओं से ग्रस्त रहता है। समाज का दृष्टिकोण उनके प्रति बदल जाता है, और 'एवलिन 'को इन्हीं स्थितियों का सामना करना पड़ता है। 'एवलिन' मोहन राकेश की ऐसी स्त्री पात्र है जो कई पर भी समझौता नहीं करती, और अपना स्वाभिमान बचाए रखती है।

## 3.5 आर्द्रा

**पात्र – 'बचन '**

आर्द्रा कहानी में मॉ की ममता को दिखाया गया है। इस कहानी में राकेश ने पुरानी पिढी के प्रति नई पीढ़ी की सोच को दिखाया है। मॉ अपने दोनों बेटों से प्रेम करती है पर दोनों का उसके प्रति जो प्रेम है उसमें अंतर पाती है। उसका एक बेटा सुशिक्षित है और सुख सुविधाओं से संपन्न है वही दूसरा बेटा'बिन्नी' बम्बई में किसी भी प्रकार का काम करके झोपड़पट्टी में अपना जीवन व्यापन करता है और उनकी मॉ ज़्यादातर उसी के पास रहती है। 'बचन 'अपने दोनों बेटों की चिंता में परेशान रहती है, जब वह लाली के पास जाती है तब उसे वहां पर अपना होना भी निरर्थक लगता है। लाली को अपनी मॉ और भाई की विशेष चिंता नहीं रहती वह अपने काम में इतना व्यस्त रहता है कि उसे अपनी मॉ के साथ बात करने के लिए समय भी नहीं मिलता। इस कहानी में मां की उपेक्षा नहीं दिखाई देती है परंतु लाली के यहां सबकुछ होने के बावजूद वह ख़ाली महसूस करती है, खुद को अकेला पाती है,उसे अपनी उपयोगिता वहां पर निरर्थक लगती है। लाली की व्यस्थता के कारण वह अपनी मॉ के साथ वक्त नहीं बिता पाता, और इसी कारण 'बचन 'को वहां कुछ अधूरा सा लगता है। वह उस घर में घूटन, पीड़ा, अकेलेपन का अनुभव करती है।

## 3.6 आखिरी सामान

**पात्र – 'बेला भण्डारी '**

'बेला भण्डारी ' इस कहानी की प्रमुख पात्र है। वह एक सुशिक्षित और अपना निर्णय ख़ुद लेनेवाली स्त्री है। उसका पति सुशील अपनी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति के कारण अपनी पत्नी से अपने अधिकारी के साथ सम्बंध बनाने के लिए कहते है, जिसकी 'बेला भण्डारी ' ने कभी कल्पना भी नहीं की थी, जब यह बात उसे पता चलती है तब से उसकी अंतर्व्यथा व्यक्त होती नज़र आती है। वह एक सुशिक्षित और स्वाभिमानी स्त्री का प्रतिनिधित्व करती है, वह अपने पति के अधिकारी की वासनापूर्ति का साधननहीं बनती, खुद को उससे बचा लेती है परंतु उसके मन में यह डर रहता है कि वह खुद के पति से कैसे बचे,जो पति खुद अपनी पत्नी को दूसरे आदमी के साथ संबंध बनाने के लिए कह रहा है उससे वह कैसे बचेगी, यह डर उसके मन में होता है और यही इसके अंतर्द्वंद्व और अकेलेपन का कारण बनता है। 'बेला भण्डारी ' के घर की हर वस्तु की जब नीलामी की जाती है तब अंत में मिसेज भण्डारी को नीचे बुलाया जाता है तब वह खुद अपने आप को आखिरी सामान के समान मानती है। 'बेला भण्डारी ' खुद को अकेला और असहाय बन चुकी है।

## 3.7 मरुस्थल

**पात्र – इंदु**

मरुस्थल इंदु नामक अबोध बालिका की कहानी है। इस कहानी में इंदु के माता और पिता दोनों ही उसे व्यावसायिक दृष्टि से देखते हैं। और इसका नौ वर्षीय इंदु की मनस्थिति पर जो प्रभाव पड़ता है यह उसे कहानी के माध्यम से स्पष्ट किया है। मरुस्थल कहानी में वेश्यावृत्ति दिखाई देती है। इस कहानी में इंदु के माध्यम से स्त्री जीवन पर वेश्यावृत्ति का जो प्रभाव रहा है उसका चित्रण मिलता है। इंदु उम्र में छोटी है, पर उसकी सोच बड़ों जैसी है, उसे इसी व्यवसाय से नफरत है। इंदु की मॉ इस व्यवसाय में होती है, ओर इंदु को भी इसके माता- पिता इसी प्रकार के व्यवसाय में धकेलकर पैसा कमाना चाहते है, परंतु इंदु डॉक्टर बनना चाहती है, पर उस घर में उसकी इच्छाओं का कोई मोल नहीं होता, उसे बेटी नहीं बल्कि पैसा कमाने के साधन के रूप में देखा जाता है। इंदु इस प्रकार के परिवेश बढ़ी हैंकि वह इतनी छोटी उम्र में भी इसके प्रति दूसरों की नज़रों को समझती है, इसलिए वह घर से दूर जाना चाहती है। इंदु से यह सब बर्दाश्त नहीं होता, उसे लोगों द्वारा जब रण्डी की औलाद कहा जाता है तब उसे बहुत बुरा लगता है, मोहन राकेश ने इस कहानी में उसी की संवेदना को मार्मिक्ता से रेखांकित किया है। इस कहानी में इंदु की स्थिति से यह स्पष्ट होता है कि कई बार माता- पिता भी अपने स्वार्थ के कारण बच्चों को पैसों के लिए, बेचते है।

## 3.8 उर्मिल जीवन

**पात्र – नीरा**

नीरा इस कहानी की प्रमुख पात्र है। यह कहानी ऐसे पात्र की है जो सत्रह वर्ष की होते ही उसका विवाह किया जाता है। उसकी बहन की मृत्यु के बाद उसकी शादी उसके जीजा से की जाती है, जो उम्र में उससे बहुत बड़ा होता है। इस कहानी में शादी के बाद नीरा के बदलते जीवन को और उसके साथ उसको घूटन ओर अकेलेपन को दर्शाया है। उसका जो नया रिश्ता जुड़ता है उस कारण उस पर क्या बीती इसका चित्रण यहां पर  मिलता है। नीरा ने अपनी  शादी को लेकर कई सारे अपने देखे होंगे, परन्तु जब उसका विवाह हो जाता है तब उसकी मधुरतम कल्पना विभिषिका बनकर उसके जीवन में छा जाती है। शादी के बाद नीरा अब पुरानी, नासमझ नीरा नहीं राही बल्कि एक समझदार नव'युवती'बन गई है। 'उर्मिल जीवन' इस प्रकार में मोहन राकेश ने ऐसी स्त्री पत्र को लिया है जो अपना आकांक्षाओं को दबकर, हालतों से हारकर सबकुछ चुपचाप सहने के लिए मजबूर  है।

## 3.9 उसकी रोटी

**पात्र – बालो,'जिंदा '**

'बालो 'इस कहानी की मुख्य पात्र है। वह एक ग्रामीण स्त्री है गांव की स्त्री की मानसिकता को इस कहानी में रेखांकित किया गया है।'उसकी रोटी' उस भारतीय स्त्री की कहानी है जो अपने पत्नी होने के धर्म को निभाते- निभाते अपने पति के सारे अत्याचारों को चुपचाप सहन करती है, 'बालो 'इसी का उदाहरण है। वह अपने पति को ही अपना सब कुछ मानती है। 'बालो 'एक भारतीय विवाहित गांव की स्त्री है, वह पूर्ण रूप से अपने पति पर निर्भर है। बालों हमेशा मानसिक पीड़ा में जीती है पर अपने पति से कभी कुछ कहती नहीं है। वह ऐसी औरत का प्रतिनिधित्व करती है जो सदियों से पुरुष के अधीन जी रही है।"इस कहानी में आज भी गांवों में बसनेवाली भारतीय विवाहित स्त्री जिन व्यथाओं ओर संवेदनाओं को लेकर जी रही है उसका अत्यंत मार्मिक चित्रण मिलता है। "[3]"यह कहानी 'बालो 'की अंतर्व्यथा को व्यक्त करती है। 'बालो 'को खुद की कोई विशेष चिंता नहीं है, वह सिर्फ़ अपने पति को हर हाल में खुश रखना चाहती है। 'बालो 'सब कुछ सहन करने के बावजूद अपना पत्नि होने का कर्तव्य निभाती है। उसका जीवन तनाव और विडंबनापूर्ण है।

## 3.10 सुहागिनें

**पात्र- मनोरमा,'काशी '**

सुहागिनें 'काशी 'और 'मनोरमा 'इन दो सुहागिनों की कहानी है, इनकी विडंबना यह है कि सुहागिनें होते हुए भी, अपने पति से दूर अकेलेपन में जी रही है। 'मनोरमा 'एक पढ़ी लिखी स्त्री है, वह स्कूल की मुख्याध्यापिका है और और 'काशी 'उसकी नौकरानी है। 'मनोरमा 'नौकरी के कारण अपने पति से दूर रहने के लिए मजबूर है, वह आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के बावजूद अपने पति के अनुसार उसके अधीन जीने के लिए मजबूर है। 'मनोरमा 'के पति सुशील का परिवार संयुक्त परिवार होने के कारण आर्थिक सहायता के लिए वह 'मनोरमा 'पर भी नौकरी का दबाव डालता है। 'मनोरमा 'सब कुछ होने के बावजूद खुद को अकेला पाती है, अपने जीवन के आभावों के कारण उसका मन उदास रहता है। इस कहानी की दूसरी पात्र 'काशी 'है, जो एक परित्यक्ता स्त्री है, उसका पति पठानकोठ में दूसरी औरत के पास रहता है और वह अकेली अपने बच्चों को मुश्किल से संभालती है। 'काशी 'और 'मनोरमा 'दोनों ही अपने पति द्वारा किए जा रहे अत्याचारों को चुपचाप सहन करती जाती है। 'मनोरमा 'पढ़ी लिखी और आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के बावजूद उसके जीवन के किमती निर्णय भी वह नहीं ले पाती, उसकी मां होने की इच्छा भी अधूरी रहती है। उसके पति की अभी बच्चे न चाहने की इच्छा भी वह मान लेती है और खुद के लिए कुछ कर नहीं पाती, वह अकेलेपन में घुटती चली जाती है।

### 3.11 नए बादल

इस कहानी में स्त्री गौण पात्र के रुप में है। लेखक ने इस कहानी के माध्यम से स्त्री और पुरुष को देखने के दृष्टिकोण को रेखांकित किया है। जब एक नव'युवती' और दो लड़के एक साथ धर्मशाला में आश्रय लेते है तब वहां के चौकीदार उन्हें शक भरी नज़र से देखते है। इस कहानी में यह दिखाया गया है कि समाज में एक स्त्री औरपुरुष को साथ देखकर  लोग केवल एक ही दृष्टि से देखते है कि उन दोनों के बीच कुछ संबंध होंगे, पर कोई यह नहीं सोचता कि पुरुष और एक स्त्री दोस्त भी हो सकते हैं। इस कहानी में यह बताने की कोशिश की गई  है कि आधुनिक युग में एक लड़का और लड़की के बीच दोस्ती जैसी भावना भी हो सकती है और यह एक साधारण सी बात है जिसे कुछ लोग अभी भी समझ नहीं पा रहे हैं न ही स्वीकार करने के लिए तैयार हैं। लेखक ने इस कहानी के माध्यम से समाज की स्त्री और पुरुष को साथ देखने की जो दृष्टि है उसपर व्यंग्य किया गया  है कि आज भी उन्हें समाज में किस प्रकार से देखा जाता है और इस कारण उनके खिलाफ़ लोग हीन भावनाएं रखते हैं इसकी ओर संकेत किया गया  है।

## 3.12 सीमाएं

**पात्र – 'उमा '**

'उमा ' इस कहानी की प्रमुख पात्र है।' सीमाएं' एक ऐसी लड़की की कहानी है जो हमेशा अपनी असुंदर होने की भावना को लेकर परेशान रहती है। वह हमेशा अपने आप में खोई रहती है। वह अपने असुंदर होने की भावना के कारण हमेशा अकेलेपन में जीती है, सबसे दूर रहना चाहती है। डॉ०लक्ष्मी शर्मा इसके बारे में कहती है कि"सीमाएं कहानी भी मनुष्य की स्वाभाविक यौनेच्छा के उद्याम स्वरूप से जन्मी कहानी है.... पुरुष- सान्निध्य की प्रबल इच्छा को संतुष्टि मिल रही होती है "4"'उमा ' को अपने विवाह की प्रतीक्षा होती है, परंतु उसकी यह इच्छा भी लंबे समय तक दबी रह जाती है। जिसके कारण उसकी यौन संबंधी इच्छाएं भी दबी रह जाती हैं।"अपनीउम्र कीस्वाभाविक रोमानी इच्छाओं के चलते वह गले की ज़ंजीर गवा बैठती है। "5"वह हमेशा इस सोच के साथ जीती है कि वह असुंदर है, उससे कोई प्रेम नहीं करेगा, उसकी ओर कोई आकर्षित नहीं होगा, परंतु जब वह मंदिर में जाती है तब एक पुरुष का हाथ उसके गले को स्पर्श करता है , अपनी दबी काम इच्छा और रोमांच के आगे अपने प्रति उस स्पर्श को पहचान भी नहीं पाती है। मोहन राकेश ने 'उमा ' की मानसिक स्थिति का, उसके भीतर उठने वाले द्वंद्व का अत्यंत सजीव चित्र पाठकों के सामने रखा है, ताकि पाठक 'उमा ' की पीड़ा को उसके दर्द को समझ सके। इस कहानी में असुंदर होने की भावना के कारण स्त्री मन में चल रहे अंतर्द्वंद्व को उसके दुख और इससे उत्पन्न संवेदना को प्रकट किया गया है।

### 3.13 खाली

**पात्र – तोषी**

'तोषी'इस कहानी की नायिका है। 'तोषी’खुद को अकेला और अंदर से खोखला मानती है।‘खाली’ कहानी में 'तोषी'और उसके पति के बीच तनाव बढ़ता चला जाता है। इस कहानी की नायिका मध्यवर्गीय कामकाजी स्त्री है, वह हमेशा घर की चारदीवारी में रहती है, अपना जीवन दिन- ब- दिन खाली होते जाने की भावना से वह ग्रस्थ है। “उनकी स्थिति दिवारों के बीच पिंजरे में कैद पक्षी की तरह है जो उन्मुक्त आकाश में उड़ना चाहती है पर उड़ नहीं पाती।“[6]” विवाह के आठ साल बाद भी 'तोषी'और उसके पति के बीच संबंध बन नहीं पाते, उनके प्यार घटता गया, और वह दोनों एक दूसरे से जुड़ नहीं पाए। इन सब कारणों से 'तोषी'के मन में एक चिढ़  सी रहती है, वह आठ सालों तक यह समझ नहीं पाती कि उसे किस चीज़ से चिढ़ है? 'तोषी'का पति हमेशा उसे शक की नज़र से देखता है, जुगल के घर पर न होना भी 'काशी 'को होने जैसा लगता है। 'तोषी'और जुगल के बीच एक दूसरे से कोई जुड़ाव नहीं दिखता, न ही प्यार दिखता है। थी तो बस आठ सालों की ज़िंदगी जो लगातार बस चल रही थी।

## 3.14 एक और ज़िंदगी

**पात्र – बिना,'निर्मला '**

इस कहानी में दो स्त्री पात्र आए हैं, ‘बिना’ और ‘निर्मला’। बिना प्रकाश के साथ शादी करती है, बिना उसकी पहली पत्नी है, ‘बिना’ और ‘प्रकाश’ अपनी मर्ज़ी से शादी करते हैं किंतु शादी के कुछ ही महिनों बाद दोनों एक दूसरे से अलग रहने लगते हैं। 'बिना' एक पढ़ी-लिखी और नौकरी पेशा महिला है, 'बिना' में काफ़ी अहंकार भी भरा हुआ होता है। और ‘प्रकाश’ में भी अहंकार होता है। इसी के चलते ‘प्रकाश’ और ‘बिना’ दोनों अलग हो जाते हैं, उनका बच्चा पलाश ‘बिना’ के साथ रहता है और ‘बिना’ अपने बेटे ‘पलाश’ को ‘प्रकाश’ को सौंपने से मना करती है।

दूसरा पात्र है निर्मला। 'निर्मला 'प्रकाश की दूसरी पत्नी के रुप में चित्रित है।“'निर्मला 'को मोहन राकेश ने सहज- स्वाभाविक चरित्र के रुप में विकसित नहीं होने दिया है। उसे एबनॉर्मल, असामान्य ही नहीं, किसी हद तक विक्षिप्त पागल कहा है।”[४]'निर्मला 'एक साधारण लड़की है, परंतु उसकी मानसिक स्थिति अच्छी नहीं थी, और उसके परिवारवालों को इसके बारे में पता होता है फिर भी वह प्रकाश से उसकी शादी करते हैं। इस कहानी से लेखक ने इस ओर संकेत किया है कि समाज में एक स्त्री की शादी को ही उसके परिवार वाले अपना धर्म समझते हैं, चाहे उसका मानसिक संतुलन ठीक हो या न हो पर फिर भी उसकी शादी की जाती है उस स्त्री को कोई समझने की कोशिश नहीं करता।

## 3.15 हक हलाल

**पात्र – पहाडी 'युवती'**

इस कहानी में स्त्री गौण पात्र के रुप में आई है।इस कहानी के माध्यम से मोहन राकेश ने स्त्रियों को स्वार्थ और मजबूरी के कारण बेचा जाता है, उनका व्यापार किया जाता है, यह दिखाने का प्रयास किया है। इस कहानी में पंडित जी का पात्र आया है उसने बहुत ही कम उम्र की लड़की से शादी की, और उस लड़की को उसने डेढ़ सौ रुपए देकर अपनी पत्नी बनाया है। एक दिन पण्डित की पत्नी घर से भाग जाती है, तब पण्डित उनके घरवालों को धमकाता है और कहता है कि 'जब तक उनकी बेटी घर वापिस नहीं लौटती तब तक उनकी दूसरी बेटी को अपने पास रखने की बात वह उनसे करता है। इस कहानी की स्त्री को वस्तु की तरह देखा जाता है, जैसे किसी वस्तु को खरीदते हैं उसी प्रकार पण्डित भी शादी के नाम पर अपनी पत्नि को खरीदकर लाता है।इस कहानी में शादी के नाम पर एक प्रकार का व्यवसाय ही किया जाता है। "हक हलाल" इस कहानी में पंडित कहते है कि "बड़ी बहन सौ रुपए में मिल सकती थी । पर यह जरा ख़ूबसूरत थी। उम्र छोटी थी, पर मैंने सोचा कि इसकी कोई बात नहीं।"[9] मोहन राकेश का नारी संसार इस किताब में लिखा गया है कि "स्त्रियों की, जैसे भारतीय समाज में कोई इच्छा नहीं – गाय बकरी की तरह बिकती है, जो चाहे हाँक ले जाय।"[10]

## 3.16 जानवर और जानवर

**पात्र – आंट सैली, मिराशी**

इस कहानी में कई नारी पात्र आए हैं। “इस कहानी के स्त्री पात्रों के जीवन में निरसता,खालीपन, और कटुता है, “स्थिति यह है कि कहानी में नारियां विवशतओं में नौकरी करती हैं पर असुरक्षित हैं।“11” इस कहानी के स्त्री पात्र आर्थिक आभावों से झूँझ रहे हैं और उनकी मजबूरियों के कारण उन्हें कई सारे अत्याचारों का सामना करना पड़ता है। इस कहानी में चित्रित हर स्त्री को फादर फिशर के शोषण को सहन करना पड़ता है। सभी स्त्रियों को आर्थिक स्थिति और नौकरी के कारण मजबूरी में फादर फिशर की वासनापूर्ति का साधन बनना पड़ता है।

## 3.17 धुंधला द्विप, दोराहा, लक्ष्यहीन

**पात्र – राधा,'श्यामा '**

इस कहानी में स्त्री गौण पात्र के रुप में आई है। 'राधा 'और 'श्यामा 'दो नारी पात्र हैं। 'राधा 'और 'श्यामा 'दोनों केसरी को चाहती हैं, केसरी खुदकी मर्ज़ी से चलनेवाला किसी की न सुननेवाला व्यक्ति है, 'श्यामा 'की केसरी से शादी हो जाती है। और 'राधा 'केसरी को चाहती है पर उसे 'श्यामा 'और केसरी के संबंध के बारे में पता चलने पर वह खुद को दूर रखती है और नरेंद्र से शादी करती है। राकेश की यह कहानी 'राधा 'की उस स्थिति का चित्रण करती है जहां पहुंचकर उसे अपने जीवन साथी के चयन का निर्णय बदलना पड़ता है।“दोराहा, धुंधला द्विप और लक्ष्यहीन

प्रेम के त्रिकोण की कहानियॉं हैं, जिसका नायक वही है केसरी- स्नेह की तलाश में भटकता हुआ। स्त्रियाँ कई हैं: श्यामा, पूर्णिमा, राधा, सरोज, मंजुला। इन स्त्रियों के विषय में प्रायः जो राय बताई गई है, वह पुरुषों की है। इसलिए उनकी प्रामाणिकता पर प्रश्नचिह्न लगाया जा सकता है।“[12]”

## 3.18 वासना की छाया में

### पात्र – पुष्पा

'पुष्पा'इस कहानी की मुख्य स्त्री पात्र है। 'पुष्पा'का पिता अपनी वासनापूर्ति के लिए किसी लड़की की तलाश करता है, वह उम्र में बड़ा है, फिर भी उसे  अपनी काम इच्छाओं की पूर्ति करनी होती है, उसको शरीर इस उम्र में भी कामवासना का भूखा होता है। वह अपनी वासनापूर्ति के लिए अपनी बेटी 'पुष्पा'का सौदा करने के लिए भी तैयार होता है। वह 'पुष्पा'का सौदा करके अपने लिए कोई लड़की खरीदना चाहता है। इस कहानी में एक पिता अपनी यौन इच्छाओं को पूरा करने के खातिर अपनी ही बेटी के पतन के बारे में सोचता है। डॉ० श्रीमती मीना पिंपलापुरे ने इस कहानी पर लिखा है कि “पुरुष की वासना जो अपनी बेटी का भी लेन- देन करने को तैयार- एक अमानविकृत होता जाता समाज। अपनी डायरी में एक स्थान पर राकेश ने प्रश्न उठाया है कि शारिरिक वासना के अतिरिक्त नारीत्व कुछ भी नहीं है क्या?”[13]”उनके इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि इक स्त्री को इस कहानी की तरह समाज में भी कई बार केवल शरीर के रुप में ही देखा जाता है। उनकी संवेदना, उनकी इच्छा  इन चीजों का जैसे कुछ महत्व हीनहीं है।

### 3.19 मिट्टी के रंग

#### पात्र-पत्नी

इस कहानी में स्त्री गौण पात्र के रुप में आई है। कहानी में स्त्री की कोई विशेष समस्या नहीं दिखाई है, केवल स्त्री पात्र का पत्नी के रुप में उल्लेख मात्र हुआ है, जिसका पति फ़ौजी होने के कारण उसे अपने पति से दूर रहना पड़ता है। इस कहानी में फ़ौजीयों का जीवन, उनकी तकलीफें, उनका जो दुख  होता है इसे दिखाने का प्रयास किया गाया है। जो देश की रक्षा करने के लिए अपने घर परिवार से दूर, अपनी पत्नी और बच्चों को भी छोड़कर अलग रह रहे हैं।

### 3.20 मलबे का मालिक

इस कहानी में स्त्री पात्र का केवल उल्लेख मिलता है, यहां पर उनकी कोई विशेष समस्या नहीं दिखती है। परंतु यह कहानी विभाजन की त्रासदी पर आधारित होने के कारण इस कहानी के पूरे परिवार टूट चुके हैं, जिसमें बदलते परिवेश के साथ मूल्यों का भी हनन होता है और अन्य लोगों के समान स्त्री पात्र भी कई संघर्ष करते है, जिसकी ओर लेखक इस कहानी में केवल संकेत करते दिखाई देते है।

**3.21 अपरिचित**

**पात्र – स्त्री**

इस कहानी की स्त्री खुद को सबके बीच होने के बावजूद अकेला पाती है, वह अपने ही परिवार वालों के बीच खुद को ‘ अपरिचित’ मानती है। उसके पति और उसके विचार में काफ़ीफर्क होता है, उन दोनों के विचार और पसंद एक दूसरे से अलग रहते हैं। इस कारण उनका वैवाहिक जीवन तनावपूर्ण रहता है। वह सबके बीच होकर अकेलेपन में जीती है। वह अपने परिवार में सभी लोगों के होने के बाबजूद सबके साथ रहने पर भी खुद को अलग पाती है वह अंदर ही अंदर घुटती रहती है, कभी किसी से कुछ नहीं कहती है। इस कहानी की नायिका जो हमेशा से खुद को अकेला पाती आई है, जो कभी खुलकर किसी से बात नही करती थी ‘वही ट्रेन में उसके समान विचार रखनेवाले अपरिचित व्यक्ति से जब मिलती है तब, उस अपरिचित व्यक्ति से खुलकर बातें करने लगती है।इस कहानी की मुख्य स्त्री पात्र अपने में ही कुछ कमी मानती है, और खुद को ही अपने वैवाहिक जीवन में उत्पन्न तनाव का कारण मानती है।

## 3.22 मंदी

इस कहानी में स्त्री गौण पात्र है। कहानी के मध्य भाग तक आते वक्त कोयला बेचनेवाली लड़की का उल्लेख मिलता है। उस लड़की को पैसों की जरूरत होती है, अपनी आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण वह कोयला बेचने का काम करती है परंतु उसे किसी के न खरीदने से पैसे नहीं मिल पाते है, उसका कोयला बिकता नहीं है। वह दुकान पर एक बैरे से कोयला खरीदने की जिद्द करती है पर वह भी नहीं खरीदता है, उसे मना कर देता है और उसे बाद में वहां से बाहर निकाला जाता है। यहाँ पर मोहन राकेश ने बिघड़ती आर्थिक स्थिति और उसे संभालने के लिए स्त्री की काम करने की मजबूरी को इंगित किया गया है।

## 3.23 फटा हुआ जूता

**पात्र – जैनी डिसूजा**

इस कहानी में 'जैनी डिसूजा' गौण पात्र है। वह एक एंग्लोइंडियन है।जैनी' एक फर्म में असिस्टेंट है और शाम को वह साल्वेशन आर्मी का भी काम करती है। "14"जैनी' एक खुले विचारों वाली स्त्री है। इस कहानी के मुख्य पात्र है 'राय', जो प्रति माह साठ रूपए कमाता है, वह अपनी आर्थिक समस्याओं के कारण अपना जीवन अपनी उच्च के अनुसार नहीं जीता है, अपनी इच्छाओं को दबाए रखता है, वही जैनी उससे विपरित है जो अपना जीवन अपनी इच्छा के अनुसार जीती है, वह अपने जीवन का पूरा आनंद लेती है।

### 3.24 काला रोज़गार

### पात्र – मिस दारुवाला

रोज़गार कहानी आधुनिक दबावों को झेलती 'मिस दारूवाला' नामक एक युवा स्त्री की आदर्शपरक संघर्ष कथा है। "[15]"वह अपने बीमार भाई का खयाल रखती है। अपने भाई का खयाल रखने के लिए वह नौकरी के अतिरिक्त अपने देह को बेचकर भी पैसे कमाने के लिए मजबूर हो जाती है। वह हर हाल में अपने बीमार भाई का खयाल रखना चाहती है, अपने भाई से 'मिस दारूवाला' बहुत प्यार करती है। 'मिस दारूवाला' एक पारसी 'युवती' है। वह अपनी हालत से विवश होकर "अनैतिक आचरण में उलझी है।"[16]"

इस कहानी की दूसरी स्त्री पात्र है 'मिसेज एडवर्ड्स' जो एक व्यवसायी स्त्री है और वह एक होटल चालती है जहां 'मिस दारूवाला' का भाई भी रहता है। 'मिस दारूवाला' और 'मिसेज एडवर्ड्स' दोनों एक दूसरे के विपरित हैं, परंतु दोनों जो कुछ भी कर रही है वह केवल आर्थिक सहायता के लिए है। जहां मिस दारूवाला पर अनैतिक काम करने की भी नौबत आती है, और 'मिसेज एडवर्ड्स' भी सिर्फ़ पैसा कमाना चाहती है।

### 3.25 मि.भाटिया

**पात्र – लीना**

इस कहानी में कुछ स्त्री पात्रों का केवल उल्लेख ही किया गया है। और उन्हीं में से एक है 'लीना' जो मि. भाटिया को रेसकोर्स के मैदान पर मिलती है, उसके बाद मि.भाटिया के शब्दों में एक साधारण सी लड़की का उल्लेख हुआ है जिससे वह शादी करना चाहता है ताकि उसके दहेज में आए पैसे उसे मिल पाए।

### 3.26 क्लेम

क्लेम कहानी में स्त्री गौण पात्र के रूप में आई है। वह एक विधवा स्त्री है, उसके पति की मृत्यु के बाद उसे क्लेम का 18 हजार मिलता है इससे भी वह संतुष्ट नहीं होती "वह सोचती है कि "यदि वह अपनी जायदाद थोड़ी ज़्यादा लिखवाती तो उसे और अधिक रुपया मिल सकता था।"[17]"

### 3.27 आदमी और दीवार

**पात्र – 'राजो'**

इस कहानी में 'राजो' नामक स्त्री की संवेदना को मार्मिक रूप से अभिव्यक्त किया गया है। "इस कहानी में नारी जीवन की विवशता और करुणा कहानी के नारी पात्र ''राजो'' के माध्यम से व्यक्त हुई है।"[18]" इस कहानी में 'राजो' का भाई सत्तो खुद अपनी पड़ोस की लड़की सरोज के प्रति

आकर्षित होता है, उसे हमेशा देखता रहता है, परंतु जब बात उसकी बहन की पसंद पर आती है तब 'राजो' को हरीश के पत्र संभालकर रखने के लिए अपने भाई की मार खानी पड़ती है।यहाँ पर पुरुष के पौरुष को दिखाया गया है, जब एक पुरुष कुछ गलत काम करता है तब किसी की नज़र में नहीं आता, उनकी ओर कोई उतना ध्यान नहीं देता, परंतु जब एक स्त्री किसी के प्रति थोड़ा लगाव भी महसूस करे, उसके प्रति सहानुभूति की भावना रखे,एक साधारण सा संबंध भी रखे तो उसे गलत समझा जाता है, उसकी ओर देखने का नज़रिया बदल जाता है। इस कहानी में 'राजो' की पीड़ा और मानसिक स्थिति का चित्रण मिलता है।

### 3.28 गुनाह बेलज़्ज़त

**पात्र – 'भागवंती','सुंदरी'**

इस कहानी में 'भागवंती' और 'सुंदरी'नामक दो स्त्री पात्र हैं। इस कहानी में स्त्री की अंतर्व्यथा केंद्र विषय नहीं है। 'भागवंती' के पति सरदार सिंह अपनी पत्नि से दूर रहना चाहता है वह 'सुंदरी'नामक एक स्त्री के साथ कुछ समय बिताता है, पर जब 'सुंदरी'को पुलिस पकड़कर ले जाती है तब अपनी पत्नि से वह सारी बातें सच सच कहता है पर उसे उसकी बात पर विश्वास नहीं होता , और उसपर वह ज़्यादा ध्यान भी नहीं देती। 'सुंदरी'को वैश्या के रूप में दिखाया है और 'भागवंती' सुंदर सिंह की पत्नी के रूप में चित्रित है।

## 3.29 बस स्टैण्ड की एक रात

**पात्र –चौधराइन, नरजूहॉं बेगम**

इस कहानी में स्त्री पात्र गौण रूप में है।यहॉं पर चौधराइन और नरजूहॉं बेगम नामक दो स्त्री पात्रों का उल्लेख हुआ है, कहानी पढ़कर लगता है कि वे दोनों पैसों के खातिर, अपनी आर्थिक स्थिति को संभालने के लिए वे क्लब में डांस किया करती हैं।

## 3.30 ग्लास टैंक

**पात्र – 'नीरू', मम्मा**

इस कहानी में 'नीरू'और मम्मा दो स्त्री पात्र आए हैं। "ग्लास टैंक एक भावुकमना नारी की मार्मिक कथा है जो आजीवन प्रेम का दमन करती रहती है और व्यक्तित्व को उलझा लेती है। "[19]" 'नीरू'की मॉं सुभाष नामक व्यक्ति के प्रति सहानुभूति का भाव रखती है और नीरा के मन में भी सुभाष के प्रति स्नेह होता है। वह दोनों ग्लास टैंक की मछलियों की तरह है जो चाहते हुए भी वहां से बाहर नहीं निकल पा रही हैं, उन्हें मजबूरन अपनी सीमा में रहना पड़ता है। डॉ० सुषमा अग्रवाल के शब्दों में "'नीरू'और उसकी मम्मा 'ग्लास टैंक'की मछलियों की तरह ही है जो निरंतर बाहर आने को छटपटाती है, किंतु उस छटपटाहट को सार्थक बनाने के लिए कोई कदम

नहीं उठाती कारण उनकी नियति भी उन मछलियों की सी है जो 'इमोशनल लाइफ' की कीमत पर सिर्फ़ शीशे से टकराती रहती है।"[20]"

## 3.31 पाँचवे माले का फ्लैट

**पात्र – सरला,'प्रमिला '**

इस कहानी में 'सरला 'और 'प्रमिला 'दो स्त्री पात्र आए हैं, जो गौण पात्र की भूमिका निभा रहे हैं। 'सरला 'और 'प्रमिला 'दोनों बहनें हैं और कहानी के मुख्य पात्र अविनाश की सहेलियाँ हैं। 'सरला 'का शादी होकर तलाक हो चुका था और उसकी छोटी बहन 'प्रमिला 'अभी कुंवारी थी और वह दिखने में उससे सुंदर थी, 'सरला 'को इस बात के कारण 'प्रमिला 'से जलन होती है कि मिलने जुलने वाले सभी उसीसे बातें करते थे, उन सबका ध्यान 'प्रमिला 'की तरफ़ ही रहता था। इस कारण 'सरला 'को अंदर से उससे जलन होती है।

## 3.32 सेफ्टी पिन

**पात्र – मिसेज सक्सेना, मिसेज सिंह, शानों**

'मिसेज सक्सेना', 'मिसेज सिंह' और 'शानों' इस कहानी के स्त्री पात्र हैं जो गौण रूप में आए हैं, यह उच्चवर्गीय स्त्रियाँ हैं, इनका जीवन अंदर से पूर्ण खोखला है। वह अपनेजीवन से अब चुके हैं पर बाहर से उनके जीवन का उनके जीने का एक अलग ही रूप दिखता है,जो केवल दिखावा है। इस कहानी के सारे स्त्री पात्र बनावटी जीवन जी रहे हैं। उनके रहन सहन के तौर तरीके उच्चवर्गीय है, परंतु वह केवल बाहरी जीवन है। अंदर से सभी स्त्रियॉ किसी न किसी कारण से टूट चुकी है अपनी जिंदगी से ऊब चुकी हैं।

## 3.33 सोया हुआ शहर

स्त्री इस कहानी में गौण पात्र के रूप में आई है, उसकी कोई मुख्य भूमिका नहीं दिखाई देती है।

## 3.34 फौलाद का आकाश

**पात्र – 'मीरा '**

'मीरा 'इस कहानी की प्रमुख पात्र है, 'मीरा 'और रवि दोनों पति पत्नी हैं। दोनों ने आपनी मर्जी से प्रेम विवाह किया था। शादी के बाद 'मीरा 'को यह संबंध, और उसका चुनाव गलत लगने लगता है। उसका पति स्टील प्लांट में काम करता है, और अपने काम में ही व्यस्त रहता है।उन दोनों के मन में एक दूसरे  के प्रति जो भावनाएं होती है वह धीरे-धीरे कम होने लगती है। उसका पति शारिरिक संबंध बनाने के समय ही उसके प्रति अत्यधिक प्यार दिखाता है। जब 'मीरा 'की मुलाकात उसके पुराने सहपाठी रामकृष्ण से होती है तब उसके मन में उसके प्रति कुछ सहानुभूति जागृत हो उठती है। उसका पुराना सहपाठी रामकृष्ण उससे जब मिलता है तब उसे केवल एक शरीर के रुप में देखता है और उसके नज़दीक जाना चाहता है। 'मीरा 'की तकलीफ यह है कि उसे सिर्फ़ एक शरीर के रुप में देखा जाता है, और उसका पति हो या सहपाठी दोनों उसके करीब आना चाहते हैं। 'मीरा 'के वैवाहिक जीवन का तनाव या है कि वह अपनी पसंद और रवि की पसंद में अलगाव पाती है। वह अपने जीवन में उत्पन तनाव के कारण उदास रहती है, कभी कभार उसे लगता है कि उसके जीवन में जो कुछ भी चल रहा है, उनके बीच जो दूरियां बढ़ती जाती हैं उसका

कारण वह खुद है, तो कभी उसे लगता है कि रवि इसका ज़िम्मेदार है। "'मीरा 'का रवि के अनुकुल न ढल पाना और रवि को अपने अनुसार न ढाल पाना ही वह कारण है जिससे दाम्पत्य संबंधों के बीच खड़ी दिवार अंत तक बनी रहती है।'"21"

**3.35 ज़ख्म**

इस कहानी में स्त्री गौण पात्र है। स्त्री पात्र की कोई भूमिका नहीं है केवल उल्लेख मिलता है। जहाँ पर कहानी का नायक कहता है कि उसे अपनी ज़िंदगी जीनी है, उसे लड़कियों के पिछे भागना नहीं है। वह किसी ऐसी लड़की से शादी करना चाहता है जो एक मॉं की तरह उसकी देखभाल कर सके, मॉं की तरह उसे प्यार कर सके और जो खुद अपने भार को संभाल सके ताकि आगे चलकर अगर कभी बेकारी आए तो उसे दुहरी तकलीफ से न गुजरना पड़े।

**3.36 जंगला**

**पात्र – फूलकौर**

'फुलकौर' इस कहानी में स्त्री पात्र के रुप में आई है। वह एक माँ की भूमिका निभा रही है, जिनका संयुक्त परिवार टूट चुका है। उसका बेटा शादी करने के बाद अपनी पत्नि के साथ अलग से रहता है, 'फुलकौर' और दोनों ही उस घर में रहते हैं, वे दोनों एक दूसरे से बात बात पर झगड़ते रहते हैं, एक दूसरे  को बातें सुनाते रहते हैं।

### 3.37 चौगान

**पात्र – 'संतो '**

इस कहानी में 'संतो ' स्त्री पात्र की भूमिका निभा रही है। वह कहानी के मुख्य पात्र हैरी विल्सन के घर में काम करनेवाली नौकरानी की सत्रह वर्षीय बेटी है, विल्सन का अपनी पत्नि से तलाक हो जाता है और अपने उस एकाकीपन को दूर करने के कारण वह 'संतो ' को अपने पास अपने घर में रखता है। वह एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति है, उसकी बिवी किसी और को चाहती है इसलिए उसे छोड़कर चली जाती है, इसके बाद वह 'संतो ' को अपने पास रखता है। विल्सन 'संतो ' को डॉटता भी है और उसे प्यार भी करता है। क्योंकि 'संतो ' उम्र में छोटी होने के कारण काफ़ी बातें जानती नहीं है, कि किस प्रकार  रहना है आदि। 'संतो ' के माध्यम से स्त्री जीवन के बिखराव को दिखाने का प्रयास किया है।

### 3.38 एक ठहरा हुआ चाकू

**पात्र – मिन्नी**

मिन्नी इस कहानी में स्त्री पात्र के रूप में आई है जो कहानी के मुख्य पात्र 'बाशी'की प्रेमिका है। मिन्नि की कोई खास भूमिका नहीं दिखाई देती परंतु उसे एक प्रेमिका के रूप में दिखाया गया  है जो कॉलेज में ग्रेजुएशन कर रही होती है।

## 3.39 क्वार्टर

**पात्र – राधा**

'राधा 'इस कहानी की गौण पात्र है, वह कहानी के मुख्य पात्र शंकर की पत्नि है, उसका पति और वह दोनों नौकरी करते हैं। उनके परिवार की सारी ज़िम्मेदारी उन दोनों पर होती है, उन दोनों को एक दूसरे  से बात करते की भी फ़ुरसत नहीं होती है। 'राधा 'एक मध्यवर्गीय स्त्री पात्र है जिसका तनाव वैयक्तिक है, उसे परिवार का भार संभालने के लिए नौकरी करनी पड़ती है। आर्थिक स्थिति के कारण 'राधा 'तनाव में जीती है। 'राधा 'और उसके पति के बीच बढ़ते तनाव का कारण यह भी होता है कि 'राधा 'को पता होता है कि उसका पति शंकर उनके पड़ोस में रहने वाले रवि शर्मा की पत्नि सरोज की ओर आकर्षित होता है।

## 3.40 पहचान

**पात्र-माँ**

स्त्री इस कहानी में गौण पात्र के रूप में चित्रित है। कहानी में स्त्री एक माँ की भूमिका निभाती है, जहाँ वह अपने पति से दूर अपने बेटे के साथ अकेली रहती है और बाद में अबरोल की पत्नि की मृत्यु के बाद कहानी के मुख्य पात्र शिवजीत की माँ अबरोल के साथ रहने लगती है।

## 3.41 भिक्षु

**पात्र – तारा**

'तारा 'इस कहानी की मुख्य पात्र है, विपाला माँ दूसरी स्त्री पात्र है। 'तारा 'विपाला माँ के यहां भिक्षुणी होती है। विपाला माँ विहार की अधिष्ठात्री है। 'तारा 'जहाँपर भिक्षुणी के रुप में होती है वही कई भिक्षु भी होते हैं, विपाला माँ का पुत्र संघमित्र भी उन्हीं में से एक है, वह 'तारा 'पर अपनी गलत नज़र डालता है, 'तारा 'विपाला माँ से अपना दुख व्यक्त करते कहती है कि "माँ तुम्हारे औरस पुत्र संघ- मित्र जिन्होंने बचपन से 'तारा 'को छोटी बहन की तरह प्यार किया -अपनी दृष्टि में अंतर ला रहे है।"[22] 'तारा 'इसके कारण अपनी कुटी के पास जब पैरों की आवाज भी सुनती है तो सहसा डर जाती है, सिहर उठती है। इस कहानी में एक स्त्री के प्रति पुरुष के बदलते दृष्टिकोण को रेखांकित किया गया है, एक पुरुष अपनी बहन जैसी स्त्री पर भी बुरी नज़र डालता है, और एक स्त्री के लिए यह सब सहना और इन चीज़ों से गुजरना बहुत मुश्किल है।

**3.42 मन्दिर मन्दिर की देवी**

**पात्र – माया,'मेहर '**

यह दो बहनों की कहानी है। दोनों बहने विधवा हैं। दोनों प्राचीन रूढ़ियों को पालनेवाली और तीर्थ यात्रा करनेवाली स्त्रियां हैं। स्त्री की मुख्य भूमिका इसमें नहीं दिखती है, केवल पात्रों की सृष्टि की है कोई समस्या नहीं दिखाई देती है।

**3.43 सतयुग के लोग**

**पात्र – शाहनी, जीतो**

इस कहानी में शाहनी और जीतो नामक दो स्त्री पात्र आए हैं। परंतु कहानी में उनकी कोई मुख्य  भूमिका नहीं है।

**3.44 चॉदनी और स्याह दाग**

**पात्र – 'मेहर '**

'चॉदनी और स्याह दाग' 'मेहर ' और समदु की प्रेम कहानी है। समदू पैसे कमाने के लिए कुछ साल 'मेहर ' से दूर जाता है ताकि वह पैसे कमा सके और आकर 'मेहर ' से शादी कर सके। पर कब तक वह आता है तब तक वहां सब कुछ बदल जाता है। जब समदु गांव से बाहर जाता

है तब उनके गांव पर कबाइलियों का आक्रमण होता है। वह कबाइली गांव की सभी लड़कियों की इज्ज़त पर हात डालते हैं, उनके साथ जबरदस्ती करते हैं और उन्हीं लड़कियों में 'मेहर ' भी होती है। जब समदु वापस आता है तब 'मेहर' उसे दूर रहने लगती है और समदु को जब वह सच्चाई बता देती है तब समदु का पहले विश्वास हार जाता है पर बाद में वह फिर भी किसी चीज की फ़िकर किए बगैर उसे स्वीकार करता है। 'मेहर' की व्यथा का इस कहानी में मार्मिक चित्रण मिलता है, उसकी व्यथा इस वाक्य से स्पष्ट होती है, 'मेहर ' समदू से कहती है कि “मैं वह 'मेहर ' नहीं हूं, जिसे तू पाना चाहता है। इस ज़िंदगी में अब मैं वह 'मेहर' हो भी नहीं सकती। मैं एक गला हुआ बीमार जिस्म हूं और कुछ नहीं -जिसमें अब जहर ही जहर है।[“23”] इस कहानी में विभाजन के समय स्त्रियों का जो शोषण किया गया इसकी ओर भी संकेत किया है।

**3.45 एक घटना**

**पात्र – 'नीलिमा ', मां**

इस कहानी में 'नीलिमा ' और उसकी मां ये दो स्त्री पात्र आए हैं। 'नीलिमा ' के पिताजी की मृत्यु के बाद उनकी आर्थिक स्थिति बिघड़ जाती है, 'नीलिमा ' और उसकी मॉं दोनों मुश्किल से अपना जीवन व्यतीत करती हैं। 'नीलिमा ' के पिता एक ग्रंथकार थे, वे अपनी बेटी को बहुत पढ़ाना चाहते थे, परंतु उनकी मृत्यु के बाद उन्होंने अपनी मेहनत से लिखे ग्रंथ उन्हें कुछ ही पैसों में बेचने पड़ते हैं। उनकी आर्थिक स्थिति इतनी खराब होने लगती है कि वे डॉ०हरीवंश द्वारा लिखित ग्रंथ दो सौ रुपए में बेच देते हैं, जिनकी कीमत उससे कई ज़्यादा हो सकती थी, पर

'नीलिमा ' और उसकी मां को इसके बारे में पता नही होता है उन्हें पैसों की इतनी जरूरत होती है कि वे जितने में भी हो उन ग्रंथो को बस बेच देते हैं।

### 3.46 बनिया बनाम इश्क

### पात्र-वेश्या

इस कहानी के मुख्य पात्र है इंद्रदेव, स्त्री को इंद्रदेव की प्रिया की रूप में दिखाया है। इंद्रदेव जिस लडकी को चाहता है वह एक आम लड़की नहीं बल्कि बाजार की एक वेश्या की लड़की होती है। वह उसे अपनी रखैल बनाकर रखना चाहता है, पर वह उसे मना कर देती है। क्योंकि उसके लिए पैसे ज़्यादा ज़रूरी होते है, इंद्रदेव कहता है "रुपया बड़ी चीज है……वह कहती है कि उसे कम- से – कम एक हज़ार रुपया महीना चाहिए! इतने से कम में उसका गुज़ारा नहीं हो सकता!"[24]" इससे स्पष्ट होता है कि इस कहानी कीस्त्री पात्र पैसों के कारण वेश्यावृत्ति करती है।

### 3.47 कटी हुई पतंगे

### पात्र – राजकरनी

इस कहानी में 'राजकरनी' नामक स्त्री पात्र आई है। कहानी का पात्र 'रवि' जब लाहौर में उसे देखता है तब उसकी और आकर्षित होता है। यह कहानी भारत विभाजन के समय स्त्री जीवन की त्रासदी पर आधारित है। 'राजकरनी' जब लाहौर में थी तब गांव की सारी लडकियां उसे, बिल्ली, बाघन कहा करती थी। परंतु उसी राजकरनी को जब रवि कुछ साल बाद देखता है तब

उसे वह मरे हुए शिकार की तरह लगती है। परिस्थितियां उसे बदल देती है, उसकी आंखों में एक घायल इतिहास झलकता है। यह विभाजन के समय एक स्त्री की विवशता और मजबूरियों को रेखांकित करने वाली कहानी है। 'राजकरनी' जो कभी साहसी थी वही विभाजन की पीड़ा से त्रस्त है। यह विभाजन की पीड़ा को सहती स्त्री की कहानी है।

### 3.48 लेकीन इस तरह

**पात्र- राजकरनी**

'राजकरनी' इस कहानी में स्त्री पात्र की भूमिका निभाती है, जो समाज की उपेक्षा सहती है। वह सुक्षित स्त्री है, और पाठशाला में विद्यार्थियों को पढ़ाने का काम करती है। वह अपनों काम इमानदारी से करती है। फिरभी वह औरों के व्यंग्य बाणों की शिकार बनती है।

### 3.49 गुमशुदा

**पात्र – पत्नि**

इस कहानी में स्त्री पात्र की कोई भूमिका नहीं है उसे केवल कहानी के मुख्य पात्र की पत्नि की रूप में दिखाया है और कहानी में उसका केवल एक ही बार उल्लेख मिलता है।

### 3.50 अर्ध विराम

इस कहानी में स्त्री गौण पात्र है। स्त्री की कोई मुख्य भूमिका नहीं है पर वह एक पत्नि के रूप में आई है जिसका पति हमेशा अपने कामों में व्यस्थ रहता है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची**

1. प्रा० रावसाहेब मोहनराव जाधव (पी०एच०डी थिसिस) मोहन राकेश की कहानियों में नारी चरित्रों की मूल संवेदना, स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, नांदेड़, जून 2001

2. वही

3. वही

4. डॉ० लक्ष्मी शर्मा, मोहन राकेश के साहित्य में पात्र-सरंचना पंचशील प्रकाशन, जयपुर,2003, पृ.74

5. वही , पृ.129

6. डॉ० श्रीमती मीना पिंपलापुरे, मोहन राकेश का नारी-संसार, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली,1987, पृ. 52

7. वही पृ.74

8. वही, पृ.76

9. सं.जयदेव तनेजा, मोहन राकेश रचनावली, खण्ड 5, हक हलाल

10. डॉ० श्रीमती मीना पिंपलापुरे, मोहन राकेश का नारी-संसार, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली,1987, पृ.81

11. वही, पृ.82

12. वही, पृ.56- 57

13. वही, पृ.67

14. वही, पृ.80

15. डॉ० लक्ष्मी शर्मा, मोहन राकेश के साहित्य में पात्र-सरंचना पंचशील प्रकाशन, जयपुर,2003, पृ.101

16. डॉ० श्रीमती मीना पिंपलापुरे, मोहन राकेश का नारी-संसार, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली,1987, पृ.78

17. डॉ० सुषमा अग्रवाल, मोहन राकेश व्यक्तित्व और कृतित्व, पंचशील प्रकाशन, जयपुर,1986 पृ.256

18. प्रा० रावसाहेब मोहनराव जाधव (पी०एच०डी थिसिस) मोहन राकेश की कहानियों में नारी चरित्रों की मूल संवेदना, स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, नांदेड़, जून 2001

19. डॉ० लक्ष्मी शर्मा, मोहन राकेश के साहित्य में पात्र-सरंचना पंचशील प्रकाशन, जयपुर,2003, पृ.46

20. डॉ० सुषमा अग्रवाल, मोहन राकेश व्यक्तित्व और कृतित्व, पंचशील प्रकाशन, जयपुर,1986 पृ.263

21.वहीपृ.239

22. सं. जयदेव तनेजा, मोहन राकेश रचनावली, खण्ड 2, पृ.116

23. वही , कहानीचाँदनीऔरस्याहदाग़, पृ.138

24. वहीबनियाबनामइश्क, पृ.150-151

# चतुर्थ अध्याय

# मोहन राकेश की कहानियों के स्त्री पात्रों का विश्लेषण

## मोहन राकेश की कहानियों के स्त्री पात्रों का विश्लेषण

मोहन राकेश ने कई विषयों पर कहानियां लिखी है। उनमें से उनकी कुछ कहानियां ऐसी हैं जो मुख्यतः स्त्री जीवन पर आधारित है। उन्होंने समाज में स्त्री और उनके संघर्ष को लेकर यह कहानियां लिखी है। स्त्री अपने जीवन में कई संघर्ष करती है, वह अंदर से टूटी हुई होती है पर उन्हें कई बार कोई समझने में असफल रहता है। इन्ही संवेदनाओं का भीतरी अन्वेषण मोहन राकेश की कहानियों में मिलता है। स्त्री की अव्यक्त संवेदनाओं को उनकी कहानियों में अभिव्यक्ति मिली है। उनकी स्त्री पात्र की समस्याओं को उजागर करने वाली मुख्य कहानियां निम्न है।

### 4.1.'नन्ही'

**पात्र – नन्हीं, 'युवती'**

'नन्ही' इस कहानी की प्रमुख पात्र है। इस कहानी में लेखक ने नवयौवन 'युवती' की भावनाओं का और उसके मन के भीतर उठने वाले द्वंद्व को मार्मिकता के साथ रेखांकित किया है। 'नन्ही' की माँ की मृत्यु के बाद वह माँ की तलाश में होती है,उसे माँ क्या है, कैसी होती है इसके बारे में कुछ पता नहीं होता है, फिर भी उसे माँ की जरूरत होती है, उसके लिए माँ एक अस्पष्ट रेखा जैसी है। अपनी माँ की मृत्यु के बाद वह अपनी बुआ के साथ ही रहती है, उसकी स्मृति में केवल बुआ और खिलौना यही दोनों चीज़ें थी।

दूसरी ओर यह उस 'युवती' की कहानी है जिसने अभी अभी बचपन से यौवन के दरवाजे पर पैर रखा ही था की उसकी शादी की जाती  है। इस कहानी की 'युवती' का जीवन यौवन में आते ही पूरा बदल जाता है, उसकी इच्छा के बगैर उसका विवाह किया जाता है।यह कहानी उस स्त्री की और संकेत करती है जिसकी इच्छा  का समाज में, उसके परिवार में भी कोई मोल नहीं होता है, शादी जैसे अवसर पर भी एक लड़की की राय लिए बिना यौवन में आते ही उसका विवाह किया जाता है वह भी। इस कहानी में भी वही होता दिखाई देता है जहां नवयौवन  लड़की का एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति के साथ विवाह किया जाता है जिसका यह दुसरा विवाह  होता है और उसकी एक बेटी भी होती है। जो लड़की बहु बनकर उनके घर आती है वह भी एक बेटी ही है यह वह भूल जाते है, जिसने अभी तक केवल बेटी ही सुना था उसे नन्हीं शादी के बाद माँ कहकर पुकारती है जो उसके लिए नया और अस्वीकार  है, क्योंकि वह जो कल तक बेटी थी वह आज माँ सुनती हैं,जो अपनी माँ की आवाज सुनना चाहती है वह चाहती है कि उसकी माँ उसे बुलाए परंतु वहां सब कुछ अलग और उसकी इच्छा  के विरुद्ध होता है जिसे वह जानते हुए भी स्वीकार  नहीं कर पाती। उसे माँ क्या हैं माँ की जरूरत और प्यार क्या हैं यह तो पता होता हैं परन्तु जब वह खुद माँ सुनती हैं तब उसे सदमा लगता है और उसे वह अस्वीकार करती है।

''नन्ही'' यह एक साथ दो बेटियों की कहानी है,एक बेटी को माँ क्या है कैसी होती है यह भी नहीं  पता है फिर भी उसे माँ स्वीकार  है चाहे वह कैसी भी हो परंतु एक बेटी ऐसी भी है जिसे माँ क्या  ओर कैसी होती है वह पता है पर जब बात उसके माँ बनने की आती है तब वह उसे स्वीकार  करने के लिए तैयार नहीं होती क्योंकि उसके लिए यह सब कुछ नया और आकस्मिक होता है और आखिरकार वह भी नन्हीं की तरह अभी मानसिक रूप से बड़ी नहीं  हुई है, केवल यौवन की अवस्था में आई है परंतु अभी भी छोटी ही है। यह एक ऐसी स्त्री की व्यथा कथा है जो अपने विवाह के बाद अपने जीवन में अचानक आए परिर्वतन को स्वीकार  नहीं कर पा रही है और इसी कारण वह अंत में ज्वर से पीड़ित दिखाई देती है। व्यक्ति अपने जीवन में अचानक से आए परिर्वतन को स्वीकार  नहीं कर पाता है और ऐसे परिवर्तनों के कारण कई बार उसे गहरा आघात भी पहुँचता है वही अपने जीवन में अचानक से बने रिश्तों को भी कोई स्वीकार  नहीं कर पाता और एक स्त्री के लिए यह काफ़ी संवेदनात्मक और पीड़ादायक होता है, लेखक ने नवयौवन 'युवती' के माध्यम से इसी की ओर संकेत किया है।

### 4.2. मरुस्थल

**पात्र- इंदु**

मरुस्थल इंदु नामक एक अबोध बालिका की कहानी है। इस कहानी में इंदु के माता और पिता दोनों ही उसे व्यावसायिक दृष्टि से देखते हैं। इस प्रकार की सोच का नौ वर्षीय इंदु की मनस्थिति पर जो प्रभाव पड़ता है यह लेखक ने इस कहानी के माध्यम से स्पष्ट किया गया है। इंदु नौ वर्ष की होने के बावजूद काफ़ी समझदार है, वह सब कुछ समझती है कि क्या सही है, वह यह भी जानती है कि उसके माता-पिता उसे बेचना चाहते है और उसे भी अपनी माँ की तरह वेश्यावृत्ति में धकेलना चाहते हैं, इसलिए वह घर से दूर रहना चाहती है, उसकी इच्छा होती है कि वह भी अपनी सहेली की तरह पढ़े और पढ़ लिखकर डॉक्टर बने परंतु उसके घर में उसके सपनों का कोई मोल नहीं होता है वह केवल उसे बेटी नहीं पैसा कमाने के साधन के रूप में देखते हैं। इस कहानी में वेश्यावृत्ति दिखाई देती है और इंदु के माध्यम से स्त्री जीवन पर इसका क्या प्रभाव रहा है इसकी और संकेत करने का प्रयास किया गया है। इस कहानी की पात्र इंदु को इस व्यवसाय से नफ़रत है, वह छोटी उम्र में भी अपने प्रति दूसरों की दृष्टि को पहचानती है, उसके मन में वेश्यावृत्ति के प्रति घृणा होती है। इंदु के मन में हमेशा एक ही सवाल रहता है कि "क्या में रण्डी हूँ?"क्योंकि लोग उसे रण्डी की औलाद कहते है और यह उससे बर्दाश्त नहीं होता। मोहन राकेश ने इंदु के अंतर्द्वंद्व को उसके संवेदना को मार्मिकता से व्यक्त किया है। इंदु जैसी कई बालिकाएँ होगी जो इस प्रकार

की हीनता की शिकार होंगी, किसी के खरीदने बेचने के व्यवसाय पिड़िता होगी,जो मूल्यहीन होते समाज की और इशारा कर रही है। इस कहानी में इंदु की स्थिति से यह स्पष्ट होता है कि कई बार माता-पिता भी अपने बच्चों को पैसों के लिए अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए बैचने के लिए भी तैयार हो जाते हैं उनका हृदय जैसे "दयाहीन मरुस्थल" है।"1"

पिंपलापुरे डॉ०श्रीमती मीना. प्रथम संस्करण. प्रकाशन संस्थान , 1986.

## 4.3 उर्मिल जीवन

**पात्र – नीरा**

'नीरा' इस कहानी की प्रमुख पात्र है। यह एक ऐसी लडकी की कहानी है जो सत्रह वर्ष की होते ही उसका विवाह किया जाता है। उसकी बहन की मृत्यु के बाद उसका विवाह उसके जीजा से किया जाता है जो उम्र में उससे काफ़ीबडा है। इस कहानी में शादी के बाद नीरा का जीवन किस प्रकार बदलता है और उसके मन की घुटन और अकेलापन किस तरह बढ़ता चला जाता है इसे दिखाया गया है। उसकी इच्छा को अनदेखा कर उसकी ना मंजूरी के होते हुए भी उसका विवाह करने पर उसपर क्या बीतती है और वह कैसे इन सब चीजों को चुपचाप सहती है इसका सूक्ष्म चित्र उभारा है। शादी हर लड़की के जीवन का एक खुशी का और कीमती पल होता है और उस एक पल को लेकर एक लड़की कई सपने देखती है, 'नीरा' का हाल भी कुछ इसी प्रकार था,परंतु शादी को लेकर उसके द्वारा की गई मधुरतम कल्पना विभिषिका बनकर उसके पुरे जीवन में छा जाती है। वह अपनी कल्पना से परे यथार्थ के बीच कुंठित जीवन जीने पर मजबूर बन जाती है।

शादी के बाद 'नीरा' अब पूरानी, नासमझ, छोटी 'नीरा' नहीं रहती बल्कि एक समझदार नव'युवती' बन जाती है। इस कहानी में 'नीरा' का अकेलापन व्यक्त हुआ है, लेखक ने इस कहानी के माध्यम से स्त्री की विवशता, उसका अकेलापन, अंतर्द्वंद्व, आदि को दिखाने के लिए नीरा जैसे पात्र का चुनावी इस कहानी में किया है।एक स्त्री की उम्र, उसकी इच्छा  इस प्रकार के समाज के लिए मायने नहीं रखती है, एक स्त्री को केवल स्त्री होने के कारण ऐसी कई विवशताजन्य स्थितियों का सामना करना पड़ता है। मोहन राकेश ने इस 'उर्मिल जीवन' इस कहानी में ऐसी स्त्री को लिया है जो हालातों से हारकर सब कुछ चुपचाप रहकर सहने के लिए मजबूर है। नीरा की विवशता इस कहानी का मुख्य विषय है ऐसे माना जा सकता है, जो नीरा जैसे ऐसी कई भारतीय मध्यवर्गीय समाज की स्त्रियों के यथार्थ को पाठकों के सामने लाता है। यहांपर एक स्त्री अपने जीवन में किस प्रकार के संघर्ष करती है इसकी ओर भी संकेत किया गया है।

## 4.4. सुहागिनें

**पात्र – मनोरमा, 'काशी '**

सुहागिनें 'काशी'और 'मनोरमा' इन दो सुहागिनों की कहानी है। 'मनोरमा' इस कहानी की मुख्य पात्र है और 'काशी'की भी एक अपनी विडंबनापूर्ण कहानी है। इनकी विडंबना यह है कि सुहागिनें होते हुए भी दोनों अपने पति से दूर रहने के लिए मजबूर है। 'काशी'और 'मनोरमा' पति से दूर अकेलेपन में जी रही हैं। 'मनोरमा' एक पढ़ी लिखी स्त्री है और वह गर्ल्स स्कूल की मुख्याध्यापिका है, 'काशी'उसकी नौकरानी है। 'मनोरमा' नौकरी के कारण अपने पति से दूर रहने

के लिए मजबूर है। कहानी की मुख्य पात्र 'मनोरमा' आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र होने के बावजूद अपने पति के दौरान में जीने के लिए मजबूर है। 'मनोरमा' के पति सुशील का परिवार संयुक्त परिवार होने के कारण आर्थिक सहायता के लिए वह अपनी पत्नी पर भी नौकरी का दवाब डालता है। 'मनोरमा' उसके पास सब कुछ होने के बावजूद खुद को अकेला पाती है, अपने जीवन के अभावों के कारण उसका मन कुंठित हो उठता है, वह हमेशा अपने पति सुशील के साथ बिताए पूराने दिनों की स्मृति में रहती है। इस कहानी की दूसरी स्त्री पात्र 'काशी'परित्यक्ता स्त्री है,उसका पति पठानकोठ में दूसरी औरत के साथ रहता है और वह अकेली ही अपने बच्चों को संभालती है। उसका पति काफ़ीसमय बाद जब भी कभी घर आता है तब उसको पिटता, और उसके पास जो कुछ भी होता उसे उससे छीनकर ले जाता है, वह घर आते वक्त उससे शारिरिक संबंध बनाता है और वापिस उसे उसी हाल छोड़कर चला जाता है 'काशी'अपने पति द्वारा किए जा रहे अत्याचारों और शोषण को चुपचाप सहती है। दूसरी ओर मानोरमा हमेशा अकेलेपन में जीती है,उसका पति कभी भी उसे मिलने नहीं आता है केवल खत के माध्यम से ही उनकी बात होती है। 'मनोरमा' के मन में भी 'काशी'की तरह बच्चों की कामना होती है पर उसका पति अभी बच्चे नहीं चाहता इसलिए वह चुप रहती है। नौकरी के कारण वह दोनों एक दूसरे से अलग रहते हैं इसी कारण उनके बीच दुरियां बढ़ती चली जाती हैं। 'मनोरमा' ऐसी स्त्री का प्रतिनिधित्व करती है जो आर्थिक रूप से स्वतंत्र और सुशिक्षित होकर भी अपने पति के दबाव में जी रही है। जहां उसे एक माँ के सुख को पाने का अधिकार भी नहीं मिल रहा है, उसके मातृत्व की कामना अतृप्त ही रह जाती है। वही 'काशी' है जिसके पास न पैसे होते है न ही उसके पति का साथ उसे मिल पाता है। पर

फिर भी उसके जीवन में माँ होने का सुख होता है, उसकी माँ होने की कामना अतृप्त नहीं रहती, वह अकेली होकर भी ‘मनोरमा’ जितनी अकेलेपन में घुटती नहीं है क्योंकि उसके पास उसके बच्चे होते हैं, भले ही उसे पति का साथ और प्यार न मिला हो परंतु बच्चों का प्यार उसे ज़रूर मिलता है, उसकी वात्सल्य की चाह अधूरी नहीं रहती।’मनोरमा’ को बच्चों से बहुत प्यार होता है किंतु उसे वह सुख नहीं मिल पाता है। ‘काशी’और ‘मनोरमा’ में फ़र्क इतना ही है कि ‘काशी’की पीड़ा बाहरी है और ‘मनोरमा’ की भीतरी। ‘मनोरमा’ अपनी पीड़ा व्यक्त नहीं करती है, वह चाहते हुए भी कुछ कर नहीं पाती है और उसकी ऊब और पीड़ा का कारण भी यही बनता दिखाए देता है।’मनोरमा’ आधुनिक युगीन स्त्रियों का उदाहरण है जो शिक्षित और आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के बावजूद कई बार अपने लिए, अपने हक के लिए आगे कदम नहीं बढ़ा पाती।

## 4.5 सीमाएँ

**पात्र – 'उमा '**

‘'उमा ''इस कहानी की प्रमुख पात्र है जो हमेशा अपने सुंदर न होने के कारण परेशान रहती है। वह हमेशा अपने आप में खोई रहती है, और इस कारण 'उमा' का अकेलापन और खालीपन बढ़ता चला जाता है वह अकेलेपन में जीती है। 'उमा’ अपने आप को सभी से दूर रखना चाहती है। वह अपनी कुरुपता के कारण अपना जीवन अभावग्रस्त मानती है, उसे लगता है कि हर -तरह की सुख सुविधाओं के होते हुए भी उसके जीवन में एक बहुत बड़ा आभाव है जो इन सब से पूरा नहीं  हो सकता। 'उमा’ को अपने विवाह की प्रतीक्षा  होती है, उसे लगता है कि सिवा विवाह के

उसके जीवन का और कोई लक्ष्य ही नहीं है ,वह लंबे समय तक विवाह के इंतजार में रहती है, पर उसकी यह इच्छा दबी रह जाती है, जिस कारण उसकी रूमानी  इच्छा  भी दबित रहती है। वह हमेशा यह सोचती है कि उससे कोई प्रेम नहीं करेगा, पर जब वह मंदिर में जाती  है तब एक पुरुष को अपनी तरफ देखते हुए देखकर वह सोचती है कि नहीं उससे भी कोई प्रेम कर सकता है। पर उसे यह पता नहीं होता है कि वह उसे क्यों देख रहा था? अपनी रूमानी  इच्छाओं के चलते वह उसकी तरफ़ देखने वाले पुरूष की नज़र को पहचान नहीं पाती। जब मंदिर में पुरूष का उसके गले को छूता है तब उस स्पर्श को महसूस करते उसे यह तक पता नहीं चलता कि उसके गले की जंजीर  उतरी जा रही है, उस पुरूष हाथ के स्पर्श के कारण ''उमा ''अपनी सोने की जंजीर  गवा बैठती है। इस कहानी में मोहन राकेश ने यौवन अवस्था में आई स्त्री की मनस्थिति को और उसके भीतर उठनेवाले द्वंद्व और अकेलेपन को रेखांकित किया है।

**4.6 उसकी रोटी**

**पात्र – बालो, 'जिंदा '**

यह ‘बालो’ नामक पात्र की कहानी है। वह एक ग्रामीण स्त्री है, गाँव की अशिक्षित स्त्री की मानसिकता का चित्रण इस कहानी में मिलता है। उसकी रोटी उस भारतीय मध्यवर्गीय स्त्री की कहानी है जो अपने पत्नी होने के धर्म को निभाते-निभाते अपने पति के सारे अत्याचारों को चुपचाप सहन करती है। वह एक अशिक्षित स्त्री है और पूर्ण रूप से अपने पति पर निर्भर है। ‘बालो’ अपने पति को ही अपना सब कुछ मानती है, वह उन ग्रामीण स्त्रियों का प्रतिनिधित्व करती है जो

अपने पति के खिलाफ कुछ भी बोलने का सहस नहीं करती,हमेशा उसे खुश रखना चाहती है और अपने उपर हो रहे अत्याचारों को सहती रहती है, कभी किसी से इसकी बात नहीं करना चाहती क्योंकि उनके मन में यह डर रहता है कि यदि उसका पति उसकी बात पर गुस्सा हो जाए? और गुस्से में आकार उसे छोड़कर चला जाए तो उसका क्या होगा? एक तो पति के छोड़ने का डर होता है और दुसरा समाज का कि समाज के लोग उसके बारे में क्या सोचेंगे? क्योंकि एक स्त्री का समाज में अकेले रहना मुश्किल बन जाता है खासकर तब जब उसका पति उसके साथ न हो। ग्राम परिवेश में रहनेवाली स्त्री की मानसिकता को मोहन राकेश ने इस कहानी में चित्रित किया है।

'बालो' भारतीय विवाहित, गांव में रहनेवाली स्त्री का दायित्व निभाती है। वह अपने पति के होने के बावजूद अपने स्वतंत्र अस्तित्व के बारे में सोचती भी नहीं है। 'बालो' हमेशा मानसिक पीड़ा में जीती नजर आती है पर अपने पति से कभी कुछ कहती नहीं है। वह परंपराओं में जकड़ी है, अपने पति की सेवा को ही अपना धर्म मानती है। 'बालो' ऐसी स्त्री का प्रतिनिधित्व करती है जो सदियों से पुरूष के अधीन जी रही है। यह कहानी 'बालो' की अंतरव्यथा को ही अभिव्यक्त करती है,एक ग्रामीण स्त्री जीवन के यथार्थ का रचनाकर ने अत्यंत सजीव और मार्मिक चित्रण किया है।

## 4.7 भूखे

**पात्र – 'एवलिन 'वार्कर**

यह ''एवलिन 'वार्कर' नामक स्त्री पात्र की कहानी है। यह एक ऐसी स्त्री की कहानी है जो अपने पति की मृत्यु के बाद आर्थिक स्थिति के साथ समर में और अपने जीवन में कई स्थितियों से संघर्ष करती नजर आती है। 'एवलि वार्कर' दिखने में बहुत सुंदर है, वह एक पढ़ी लिखी स्त्री है। वह अंग्रेज होने के बावजूद एक पंजाबी युवक से शादी कर लेती है, परंतु टी. बी के कारण उसके पति की मृत्यु हो जाती है पति की मृत्यु के बाद वह अकेली पड़ जाती है और उसे कई संघर्ष करने पड़ते है। वह जिस समाज में रहती है वहा के पुरुष उसके पति की मृत्यु के बाद उसे वासनापूर्ण दृष्टि से देखते हैं,जब 'एवलिन' अपने पति द्वारा बनाई गई पेंटिंग्स को बेचने के लिए जाती है तब भी पुरुष उसके शरीर पर बुरी नजर डालते हैं, परंतु 'एवलिन' अपना सम्मान हर हाल में बचाती है, वह अपने आदर्शों को बचाए रखती है। एक स्त्री जब पति को खोने के बाद विधवा होकर जीवन व्यतीत करती हैं तब समाज के लोगों का उसके प्रति दृष्टिकोण बदल जाता है, मोहन राकेश ने विधवा स्त्री को किस प्रकार संघर्ष करने पड़ते हैं, किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है इसे बखूबी इस कहानी में दिखाया है। 'एवलिन' अपने पति की मृत्यु के बाद हमेशा निराश रहती है, उनका बच्चा भी होता है जिसकी इच्छा ओं को भी वह पूरा नहीं कर पाती। उसे कई कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है यहां तक कि पुरूष पात्रों की वासना भरी नज़र का भी वह शिकार बनती है पर वह आर्थिक रूप से कमजोर होने के वावजूद अपना स्थिति

को सुधारने के लिए कोई गलत काम नहीं करती है। 'एवलिन' एक स्वाभिमानी स्त्री है जो किसी के आगे झुकती नहीं  है, परिस्थितियों से विवश होकर भी वह अपना आदर्श बनाए रखती है, टूटती नहीं  है।इस तरह के भयावह परिवेश में रहकर भी वह हिम्मत नहीं हारती है। 'एवलिन' उस आधूनिक युगीन स्त्री का उदहारण है जो अपने स्वाभिमान, आदर्श और सम्मान से भली भाती परिचित है।

**4.8 आर्द्रा**

**पात्र – 'बचन '**

इस कहानी में मां की ममता को दिखाया गया है। मोहन राकेश ने इस कहानी में पूरा नी पीढ़ीके प्रति नई पीढ़ी की सोच किस प्रकार  बनी है यह दिखाने का प्रयास किया है। आर्द्रा कहानी में एक मां का अपने दोनों बेटों के प्रति स्नेह दिखाई देता है 'बचन' अपने दोनों बेटों से प्रेम करती है परंतु दोनों बेटों का उसके प्रति जो प्रेम है उसमें अंतर पाती है। उसका एक बेटा 'लाली' है जो पढ़ा लिखा है और उसका जीवन सुख सुविधाओं से संपन्न है, वही उसका दुसरा बेटा बिन्नी है जिसके साथ वह बंबई में रहती है। बिन्नी बेकार है और बंबई में कोई भी काम करके झोपड़पट्टी में अपना जीवन व्यतीत  करता है, इसलिए 'बचन' को उसकी ज़्यादा चिंता होती है। एक लड़के का जीवन सुख सुविधाओं से संपन्न है और एक के पास कुछ भी नहीं होता है। 'लाली' अपनी व्यस्थता के कारण अपनी मां के साथ समय नहीं बिता पता है इसलिए जब 'बचन' उसके घर जाती है तब वहां सब कुछ होने के बावजूद खुद को अकेला पाती है, उसे लगता है कि वहां

उसकी कोई जरूरत नहीं है क्योंकि सब काम संभालने के लिए नौकर चाकर रखे हुए हैं। वह वहां पर अपनी उपस्थिति निरर्थक समझती है।'बचन' को 'लाली' के यहां होते हुए भी अपने छोटे बेटे बिन्नी की चिंता सताती है, वह उसके लिए ज़्यादा परेशान रहती है क्योंकि उसके पास कुछ भी नहीं होता है। एक मां दोनों बेटों के बिच सेतु की भूमिका निभा रही है, उसे अपने दोनों बेटों से प्यार होता है, 'लाली' और बिन्नी दोनों अपनी मां से प्यार ज़रूर करते हैं पर दोनों के प्यार में काफ़ी अंतर है, किंतु फ़र्क सिर्फ़ इतना है कि 'बचन' के ममत्व को 'लाली' के प्यार से संतुष्टि नहीं मिलती जो उसे बिन्नी के पास होने से मिलती है। इस कहानी में एक मां के निश्चल प्रेम और बच्चों के प्रति स्नेह का एक अलग रूप देखने को मिलता है। इस कहानी में एक मां की विवशता और परिवार की टूटन के कारण मां का अभावग्रस्त जीवन तथा उसकी पीड़ा के मर्मस्पर्शी दर्शन होते हैं। मां 'लाली' के यहां अपने होने न होने को निरर्थक समझती है किंतु उसका वात्सल्य और ममत्व दोनों बेटों के प्रति है और इसी संवेदना और प्रेम भावना की निर्मिति 'आर्द्रा' कहानी में मिलती है। आधुनिक युग में नौकरी के कारण कई लोग घर से दूर शहर की ओर पलायन करते हैं, इसकी वजह से कई संयुक्त परिवार एकल परिवार बन जाते हैं और इस टूटते परिवार का अन्य सदस्यों पर क्या असर पड़ता है, और शहर में जाने के बाद नई पीढ़ी की मानसिकता में बदलाव होता है जो पूरानी पीढ़ी से उसे अलग करता नज़र आता है यह इस कहानी में 'लाली' और 'बचन' के माध्यम से दिखाने की कोशिश की है।

## 4.9 आखिरी सामान

**पात्र – मिस 'बेला भण्डारी '**

'आखिरी सामान' यह मि.'बेला भण्डारी ' नामक स्त्री की कहानी है।वह एक सुशिक्षित और अपना निर्णय खुद लेनेवाली स्त्री है। सुशील अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए अपनी पत्नी से अपने अधिकारी के साथ संबंध बनाने की मांग करता है। जब 'बेला भण्डारी ' से वह बात कहता है तब वह उसे मना करती है, और यही से उसकी अंतर्व्यथा की अभिव्यक्ति दिखती है। 'बेला भण्डारी ' एक स्वाभिमानी स्त्री का प्रतिनिधित्व करती है, वह अपने पति के अधिकारी की वासनापूर्ति का साधन नहीं बनती, अपने निर्णय पर अड़ी रहती है। वह खुद को इससे बचा लेती है परंतु उसके मन में यह डर रहता है कि वह खुद के पति से कैसे बचे?जो ख़ुद उसे किसी दूसरे व्यक्ति के साथ संबंध बनाने के लिए कह रहा हो? और यही उसके डर, अंतर्द्वंद्व और अकेलेपन का कारण बनता है। 'बेला भण्डारी ' के घर की हर वस्तु की जब निलामी होती है और अंत में जब उसे नीचे बुलाया जाता है तब वह खुद को भी उस घर के आखिरी सामान के रूप में देखती है। जब तक एक पति अपनी पत्नि का साथ देता है तब समाज के लोग उसे कुछ भी कहे तो खास असर नहीं होता, पर जब पति ही अपनी पत्नी का साथ न दे तब एक स्त्री का समाज में इस प्रकार जीना काफ़ी संघर्षमय और तनाव भरा रहता है। स्त्री जब अकेली होती है तब समाज के लोग उसके प्रति तृष्ट नजर से देखते हैं। मि. 'बेला भण्डारी ' भारतीय मध्यवर्गीय परिवार की वह स्त्री है जो शिक्षित है और अपने अधिकार और स्वाभिमान को बिना समर्पण के बनाए रखने

के लिए संघर्ष करती है। 'बेला भण्डारी ' ही अकेली ऐसी स्त्री नहीं होगी, वर्तमान समय में भी ऐसी कई स्त्रियां होंगी जो अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए सतत प्रयत्न करती है, जीवन में खुद को बिखरता पाती है पर पुर्णत: टूटती नहीं है।

**4.10 'मिस पाल '**

**पात्र – 'मिस पाल '**

'मिस पाल ' इस कहानी की प्रमुख पात्र है। इस कहानी में उसका अकेलापन मुख्य विषय है। 'मिस पाल ' वर्तमान युग में आर्थिक संकटों का सामना करती है, वह खुद को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाने के लिए नौकरी करती है। वह खुद की एक अलग जिंदगी चाहती है जहां सिर्फ वह हो और उसकी स्वतंत्रता। वह जिस आफिस में काम करती है वहां के कर्मचारी इसके मोटापे के कारण उसके शरीर को गलत नज़र से देखते है, उसका मजाक उड़ाते हैं, इसलिए 'ऑफ़िस' में 'मिस पाल ' का दम घुंटता है। ऑफ़िस के लोगों से तंग आकर वह नौकरी छोड़कर मनाली चली जाती है, उसे लगता है कि वहां जाकर वह खुश रहेगी और स्वतंत्र रूप से जी पाएगी। परंतु मनाली जाने के बाद भी किस पाल का अकेलापन कम नहीं होता है, बल्कि ओर बढ़ता चला जाता है। वह अपने मोटापे के कारण खुद को सबसे दूर रखना चाहती है। 'मिस पाल ' बचपन से ही खुद को असुरक्षित महसूस करती है। उसका जीवन बचपन से अकेलेपन में बीता है,वह खुद को अकेला, निराश और उदास पाती है। इस कहानी में महानगरीय जीवन जीवन में मध्यवर्गीय स्त्री की त्रासदी का चित्रण हुआ है। 'मिस पाल ' अकेली रहना पसंद करती है। वह अपने कुत्ते पिंकी

से बहुत प्यार करती है, अपने आसपास के लोगों से अधिक उसे अपना कुत्ता पिंकी सभ्य लगता है। उसके जीवन और कोई नहीं है जिससे साथ वह खुद को सुरक्षित और स्वतंत्र महसूस कर सके। केवल उसके ऑफ़िस के रणजीत नामक व्यक्ति के साथ वह थोड़ा बहुत खुलकर बात कर पाती है, पर उसके साथ भी वह उतना जुड़ नहीं पाती है।इस कहानी में मोहन राकेश ने 'मिस पाल ' के माध्यम से वर्तमान युग में स्त्री समस्या के साथ साथ एक अविवाहित स्त्री के अकेलेपन,खालीपन और उदासीनता को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है।

## 4.11.खाली

**पात्र – 'तोषी'**

'तोषी'इस कहानी की प्रमुख पात्र है। 'तोषी'को लगता है कि वह अकेली है और अंदर से खोखली है। 'तोषी'एक मध्यवर्गीय विवाहित स्त्री है, जिसके जीवन में शादी के बाद एक खालीपन सा चलता है। उनकी शादी के आठ साल बीतने पर भी 'तोषी'और उसके पति जुगल के बिच पति पत्नी का जो रिश्ता होता है वह जुड़ नहीं पाता है, दोनों अपने शादी को नाम मात्र के लिए निभाते दिखते है, उनके बीच कोई प्यार और एक दूसरे के प्रति लगाव नहीं दिखता है। 'तोषी'और जुगल की एक संतान भी है पर फिर भी 'तोषी'को सब खाली- खाली सा लगता है, 'तोषी'और जुगल इन दोनों के जीवन के खालीपन को कोई भी चीज भर नहीं पाती, आठ साल से संबंध में बने रहने के बावजूद उनके बीच प्रेम बढ़ने की जगह कम होता है उनके रिश्ते में रिक्तता होती रहती है। 'तोषी' लगातार आठ साल तक नीरस जीवन जीने के लिए बाध्य होती है। वह हमेशा घर की

चारदीवारी में ही दिखती है पर उसका पति उसे हमेशा शक भरी नज़र से देखता है। इस कारण 'तोषी'के मन में उसके प्रति एक खीज सी होती है, जुगल का घर पर होना अथवा न होना उसे एक समान लगता है, जुगल जब घरपर नहीं  होता है तब भी 'तोषी'को उसके होने का अहसास होता है।'तोषी'वह मध्यवर्गीय स्त्री है जो हमेशा अपने घर के कामों में व्यस्थ रहती है, वह अन्य स्त्रियों की तरह नौकरी करने नहीं जाती तथा घर पर बैठी अपने कामों में उलझी रहती है, अपने आप में उलझी रहती है और लगातर एक नीरस, रिक्तता भरा जीवन व्यतीत  करती है।‘खाली’यह कहानी का शीर्षक ही एक प्रकार से 'तोषी'की खाली होती जिंदगी की ओर जैसे संकेत करता प्रतित होता है।

## 4.12. अपरिचित

**पात्र – स्त्री**

इस कहानी में स्त्री प्रमुख पात्र के रूप में है। वह सबके बीच होते हुए भी खुद को  अकेला पाती है,वह अपने परिवार के लोगों के बीच खुद को ‘अपरिचित’ मानती है। पति और पत्नी की बेमेल रुचियों का मोहन राकेश ने इस कहानी में चित्रण किया है। इस कहानी की प्रमुख पात्र खुदूको अपनों में भी अपरिचित मानती है,लेकिन जब इस कहानी वही स्त्री ट्रैन से सफर करती है तब एक अनजान व्यक्ति से बात करते वक्त खुद को अपरिचिता जैसे महसूस नहीं करती है, उन दोनों की बातचीत से यह पता चलता है कि उनकी रुचियों में कुछ समानताएं हैं। इस स्त्री को अकेले रहना पसंद होता है, परंतु उसके पति की पसंद उससे विरुद्ध है, इस कारण उनका वैवाहिक

जीवन तनावपूर्ण रहता है। अपरिचित कहानी की स्त्री पात्र का मन संवेदनाओं से भरा हुआ रहता है, उसके मन में एक साथ अलग अलग भाव रहते हैं जैसे, भय, करुणा, असमंजस आदि। वह खुद को  मनहूस मानती है, उसे लगता है कि उसके पति भी उसके कारण खुश नहीं रह पाते। उसका खुद को  मनहूस मानना कहानी में एक जगह स्पष्ट होता है जहां वह खुद कहती है कि "मैं कितनी मनहूस हूं.."लेखक ने इस कहानी में उन स्त्रियों की संवेदना को व्यक्त करने का प्रवास किया है, जो अपने वैवाहिक जीवन में अपने पति के साथ उसकी विपरित मानसिकता के कारण चाहते हुए भी खुद को  उनके पसंद के अनुकुल ढाल नहीं पाती और खुद को  रिश्ते में तालमेल न होने का कारण मानती है।एक स्त्री इस प्रकार के परिवेश में खुद को  अकेला महसूस करती है, परिवार वालों से अलग एकांत जीवन जीना चाहती है और भरे पुरे परिवेश में खुद को अजनबी जैसे मानती है। पर जब उस स्त्री को कोई समझने वाला मिलता है, जिसकी मानसिकता उनसे मिलती है उस व्यक्ति से वह अपरिचित होने के बावजूद दोनों की मानसिकता और संवेदनाएँ  एक जैसी होने के कारण उसके सामने खुलकर बात कर पाती है।इस कहानी में लेखक ने दांपत्य जीवन में विपरित मानसिकता के कारण रिश्तों में कैसे परिर्वतन और दरार पड़ती है जिसे एक स्त्री केवल अपना संबंध और रिश्ता बचाने के लिए खुद को  न चाहते हुए भी ऐसे रिश्तों से अलग नहीं कर पाती है, न स्वयं को दूसरों की इच्छा के अनुसार बदल पाती है इसलिए एकांत जीवन जीना चाहती है।

उपर्युक्त मोहन राकेश द्वारा लिखित कहनियां हैं, उनमें से उनकी कुछ कहानियां ऐसी है जो मुख्त्तः स्त्री जीवन की समस्याओं पर आधारित है, स्त्री उन कहानियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, उन सभी कहानियों में कुछ समानताएं मिलती हैं जैसे सभी स्त्री पात्र अकेलेपन, आर्थिक समस्या, वैवाहिक जीवन में तनाव, पुरुष प्रधान समाज इन समस्याओं का सामना करती दिखाई देती हैं उन कहानियों का विश्लेषण निम्न प्रकार से है।

**4.2. स्त्री पात्र और उनकी समस्याएं**

**4.2.1. पुरुष प्रधान समाज**

**उसकी रोटी**

**पात्र- 'बालों'**

यह कहानी 'बालो'नामक ग्रामीण स्त्री की कहानी है। 'बालो'अपने पति सुच्चासिंह पर निर्भर होती है, वह एक गांव में रहनेवाली संस्कारों और संस्कृति से जुड़ी हुई उसके अनुसार चलनेवाली स्त्री है। वह शिक्षित नहीं है ना ही कुछ कमाती है, वह केवल घर के कामकाजों में व्यस्थ रहती है। सुच्चासिंह उसपर कई बार गुस्सा करता है, उसे गालियां भी देता है पर 'बालो' इसका विद्रोह नहीं करती, वह चुपचाप सब कुछ सहन करती जाती है। 'बालो' की सहनशीलता के पिछे कई कारण होंगे, जैसे वह ग्रामीण परिवेश से होने के कारण, शिक्षा ग्रहण न करने के कारण अपने अधिकारों की उसे जानकारी नहीं होगी। वह ऐसे समाज में जीती है जहां केवल

पुरुषों का राज्य है, एक स्त्री को तब केवल घर के काम करनेवाली स्त्री के रूप में ही अपनाया जाता था, और स्त्रियां भी इसी की आदी हो चुकी थीं उस कारण 'बालो' अपने लिए कुछ करने का सोचती भी नहीं है, उसे बस अपने पति को खुश रखना था और उसी को वह एक पत्नि होने के नाते अपना धर्म समझती थी। 'बालो' की मानसिकता उस विवाहित भारतीय स्त्री की है जो गांव में रहनेवाली है, जिसे अपना पति ही सब कुछ है ऐसा लगता था। समाज में एक स्त्री की भी भूमिका पुरुष जितनी महत्वपूर्ण है यह शायद उसे पता नहीं होता, क्योंकि वे सदियों से पुरुष के अधीन जीती आ रही है और इस कहानी में 'बालो' के माध्यम से मोहन राकेश ने यही दिखाने का प्रयास किया है।

''जिंदा '' इस कहानी की अन्य स्त्री पात्र है, वह भी 'बालो' की तरह पुरुष प्रधान समाज के अधीन जी रही है। जब 'बालो' उसे उपले लाने भेजती है तब गांव का एक व्यक्ति उसके साथ जबरदस्ती करने की कोशिश करता है, पर वह वहां से भाग निकलती है परंतु बालो' के मन में एक अजीब सा डर होता है, कि जब उसके साथ वह जबरदस्ती करने की कोशिश कर रहा था तब शायद उसे वहां पर किसी ने देखा तो नहीं होगा। क्योंकि वह डर जाती है कि अगर उसे किसी ने देखा होगा तो लोग उनके बारे में क्या सोचेंगे? उनकी इज़्जत पर दाग़ लग जायेगा, ऐसे उसे लगता है जिसकी ओर मोहन राकेश ने कहानी में केवल संकेत किया है। कहानी के दोनों स्त्री पात्रों के दृश्य के माध्यम से समाज में चली आ रही पितृसत्ता के दर्शन होते हैं। एक स्त्री का इस प्रकार का जीवन जीना, सारे अत्याचारों को चुपचाप सहन करना, खुदपर हो रहे शोषण पर आवाज न

उठाना यह सारी बातें यही स्पष्ट करती है कि जिस परिवेश में वे बढ़ती है, जिस प्रकार की जिंदगी उन्हें गुज़ारनी पढ़ती है वही इनकी चुप्पी का कारण बनता है। और मुख्य बात यह है कि एक स्त्री जो चाहे किसी भी परिवेश में बढ़ी हो, शिक्षा ही उसको अपने अधिकारों तक पहुंचने की शक्ति दे सकती है जो इस कहानी के पात्रों में नहीं मिल पा रही है क्योंकि वे दोनों पात्र केवल पुरुषों के अधीन जी रहे है, उन्हें अपनी अस्मिता की पहचान नहीं है।

**'मिस पाल '**

**पात्र – 'मिस पाल '**

'मिस पाल ' एक सुशिक्षित स्त्री है। वह अपने आप को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाना चाहती है। वह एक 'ऑफ़िस' में काम करती है पर वहां के जो कर्मचारी होते हैं वह उसके मोटापे के कारण उसके शरीर पर गंधे 'कॉमेंट्स' करते हैं। इस कारण वह हमेशा उदास रहती है। इस कहानी में पुरुषों की उसके प्रति जो सोच है वह पुरुष प्रधानता की ओर ही संकेत करती है, इनके इसी बर्ताव की वजह से ''मिस पाल '' अपने ही शरीर को लेकर, अपनी असुंदरता को लेकर खुश नहीं होती। पुरूष जिस दृष्टि से उसे देखते हैं, वही दृष्टि उसके अंतर्द्वंद्व और निराशा का कारण बनता है। समाज के अन्य लोग भी उसके प्रति एक अलग नज़र रखते हैं, क्योंकि वह अधेड़ उम्र की होने के बाद भी अविवाहीत होती है। यह सब चीज़ें 'मिस पाल' के जीवन की उदास का कारण बनती है, इस वजह से वह सबसे दूर रहना चाहती है, वह उस समाज के लोगों से दूर रहना चाहती है क्योंकि उसे लगता है कि वहां से दूर जाने के बाद वह स्वतंत्र होगी। इसी सोच के साथ वह अपनी

नौकरी छोड़ने पर भी मजबूर हो जाती है, और मनाली जाकर रहने लगती है पर वहां जाने पर भी उसके जीवन की जो निराशा है,जो अकेलेपन की भावना है वह घटती नहीं है है बल्कि बढ़ती चली जाती है। ''मिस पाल '' के इस व्यवहार का कारण वहां का समाज ही है और पुरूष प्रधान सोच भी कहीं न कहीं ज़िम्मेदार है।

## सुहागिनें

### पात्र – मांनोरमा , काशी

'सुहागिनें' कहानी में 'मनोरमा' और 'काशी' दी स्त्री पात्र आए हैं, दोनों पात्रों की विडंबना यह है कि दोनों शादी शुदा होकर भी अपने पति से दूर अकेलेपन में जीने के लिए बाध्य हैं। उनकी समस्या यह है कि दोनों ही अपने पति के अनुसार अपनी जिंदगी जीती हैं। 'मनोरमा' एक सुशिक्षित स्त्री है जो नौकरी भी करती है, आर्थिक रूप से स्वतंत्र है, पर इसके बावजूद अपना पति के दवाब में जीती है।'काशी' 'मनोरमा 'की नौकरानी है जो थोड़ा बहुत कमाती है पर उसका पति उससे वह भी चुनकर ले जाता है। उसका पति दूसरी औरत के पास रहता है पर जब कभी घर आता है तब 'काशी 'पर अपना अधिकार जताता है, उसे पिटता है, उसका शोषण करता है और उसे उसी हाल छोड़कर चला जाता है। 'काशी' अकेले बच्चों को मुश्किल से संभालती है। 'मनोरमा' की स्थिति इस प्रकार है कि वह भी अपने पति के अनुकूल जीती है यहां तक कि अपनी मातृत्व की कामना को भी वह पूरा नहीं कर पाती क्योंकि उसके पति को अभी बच्चा नहीं चाहिए होता है। इन दोनों पात्रों की संवेदना का स्वरूप अलग अलग है पर संवेदना के कारण समान है। 'मनोरमा' और

'काशी' दोनों ही अपनी अस्मिता को बचाए रखना चाहती हैं पर चाहते हुए भी आगे कदम नहीं बढ़ा पाती। इसका कारण यही है कि वह आधुनिक युग में होकर भी सदियों से चली आ रही परंपरा और संस्कृति में जकड़ी हुई हैं, जहां पुरूष के पास ही निर्णय लेने की शक्ति रहती है।

**आखिरी सामान**

**पात्र – 'बेला भण्डारी '**

''बेला भण्डारी '' इस कहानी में एक पढ़ी लिखी, और अपने निर्णय स्वयं लेनेवाली स्त्री है। जो शादी करने के बाद अपने पति की महत्वाकांक्षी स्वभाव के कारण कुंठित हो जाती है। उसका पति अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए अपनी पत्नी को दूसरे व्यक्ति के साथ संबंध बनाने के लिए कहता है। और ''बेला भण्डारी '' इसी कारण अपने को अकेला पाती है, यही से उसके अंतर्द्वंद्व की शुरुवात होती है। 'बेला भंडारी' अपने आप को अधिकारी की वासनापूर्ति का साधन बनने से बचाती है परंतु उसके मन में हमेशा यह सवाल होता है कि वह अपने आप को खुद के पति से कैसे बचा पाएगी? और इसी कारण वह खुद को असुरक्षित महसूस करती है।

### 4.2.2. अकेलेपन और आर्थिक समस्याओं पर आधारित कहानियाँ

**'मिस पाल '**

**पात्र – 'मिस पाल '**

''मिस पाल '' ऐसा पात्र है जो मन से बिखरता जा रहा है, अंदर से टूटा हुआ, निराश और अकेला है। समाज के लोगों का उसके प्रति व्यवहार, पुरुष वर्ग की विकृत दृष्टि, इन सब चीजों से तंग आकर वह उस समाज से दूर जाना चाहती है जहां उसे औरों से हीन भावना ही मिलती है। इसलिए वह पलायन करना चाहती है, वह खुदको आत्मनिर्भर बनाना चाहती है पर वह जिस परिवेश में रहती है वे लोग उसे स्वतंत्रता से जीने नहीं देते हैं। इन परिस्थितियों के कारण उसे अपना जीवन निरर्थक लगता है, वह सार्थकता की तलाश में होती है। 'मिस पाल '' खुद को इन परिस्थितियों से मुक्त करना चाहती है और मनाली चली जाती है, पर वहां जाने पर भी उसके जीवन में कोई बदलाव नहीं होता बल्कि उसके अकेलेपन की भावना और भी बढ़ती चली जाती है। इस कहानी के माध्यम से मोहन राकेश ने मूल्यहीन होते जा रहे समाज की ओर संकेत किया है जहां एक स्त्री को समाज में आज भी पुरुष के समान आदरभाव नहीं मिल पाता। इस कहानी की पात्र ''मिस पाल '' इसी परिवेश में जी रही है और इसी मानसिकता का शिकार बनी दिखाई देती है।

**सीमाएँ**

**पात्र – 'उमा '**

'सीमाएं' यह कहानी उस स्त्री पात्र की है जो अपने असुंदर होने की भावना से ग्रस्त है। इस कहानी की पात्र ''उमा '' अकेलेपन में जीती है, उसके इसी अकेलेपन का कारण यही है कि वह अपने आप को असुंदर मानती है। उसे लगता है कि उसे कोई भी प्यार नहीं करेगा क्योंकि वह असुंदर है।''उमा '' को घर में किसी भी चीज़ की कमी नहीं होती पर उसे फिर भी सब कुछ खाली लगता है, उसे लगता है कि कोई भी चीज उसकी उस कमी को भर नहीं पाएगी।''उमा'' के अकेलेपन में घुटने का कारण यही है कि वह उसकी सहेली जितनी सुंदर नहीं है, उसे ऐसा लगता है कि उसपर महंगे से महंगी चीज़ भी फिकी ही लगेगा।''उमा' असुंदरता की भावना से इतनी ग्रस्त है कि वह अकेलेपन में ही रहती है और यही उसकी जिंदगी को अकेलेपन में ढाल लेता है। ''उमा' का असुंदर होना, और अपनी असुंदरता के कारण उदास रहना समाज की उस मानसिकता की ओर संकेत करता है जहां बाहरीय सौंदर्य को ही सब कुछ माना जाता है।

**भूखे**

**पात्र – 'एवलिन 'वॉकर**

‘'एवलिन 'वॉकर’ इस कहानी की मुख्य पात्र है, वह एक विदेशी स्त्री है जो पंजाबी लड़के से शादी करती है। उसके संघर्ष की शुरुआत तब होती है जब उसके पति की मृत्यु हो जाती है। अपने पति की मृत्यू के बाद वह बिलकुल अकेली पड़ जाती है। उसकी आर्थिक स्थिति बिगड़ जाती है। ‘'एवलिन 'वॉर्कर’ को एक स्वाभिमानी स्त्री के रूप में दिखाया है, जो ‘भूखा’ रहना पसंद करती है पर किसी के आगे झुकती नहीं है। वह जिस समाज में रहती है वहां की पुरुष लोग उसके पति की मृत्यु की बाद उसकी मजबूरियों का फ़ायदा उठाना चाहते हैं, वे उसके शरीर के भूखे होते हैं जो केवल यूज के शरीर के रुप में देखते हैं। इस पात्र को ऐसे रूप में उभारकर लेखक यही दिखाना चाहते होंगे, कि समाज में कई लोग ऐसे होते है, जो एक स्त्री के अकेला दिखते ही यूज अपनी वासनापूर्ति के साधन बनाना चाहते हैं, उसके भीतर जो दर्द है, उसकी जो परेशानियाँ है उसे कोई समझने का प्रयास नही कर्ता बल्कि सभी उसकी विवशता का लाभ उठाना चाहते हैं। पर ‘एवलिन’ ऐसा पात्र है जो उस प्रकार के समाज में रहते हुए भी टूटता नहीं है, बल्कि हर हाल में अपना स्वाभिमान बचाए रखता है।‘एवलिन’ एक शहरीय मध्यवर्गीय स्त्री की भूमिका निभा रही है, जो अपने अस्तित्व और अस्मिता के महत्व से वाक़िफ़ है।

## सुहागिनें

### पात्र –‘मनोरमा’ और ‘काशी’

‘मनोरमा’ और ‘काशी’ इस कहानी के मुख्य पात्र हैं। दोनों विवाहित होकर भी अपने पति से दूर रहती है। उनका जीवन अकेलेपन से बाध्य है।‘मनोरमा’ ओर ‘काशी’ के अकेलेपन का कारण यह है कि वे उनके पति की इच्छाओं के अनुसार जीने के लिए मजबूर हैं, दोनों चाहते है कि अपनी अस्मिता के लिए संघर्ष करें पर चाहते हुए भी कुछ नहीं कर पाते।

## 4.2.3. वैवाहिक जीवन में तनाव

## उर्मिल जीवन

### पात्र- ‘नीरा’

‘नीरा’ इस कहानी की मुख्य पात्र है। उसकी विडंबना यह है कि, उसकी बहन की मृत्यू के बाद सत्रह वर्ष की आयु में ही उसके जीजा से उसका किया जाता है,जो उम्र में उससे बहुत बड़ा है। ‘नीरा’ के वैवाहिक जीवन का तनाव यह है कि जिस आदमी से वह नफ़रत करती है उसी को अपने पति के रूप में स्वीकार करना पड़ता है। इस शादी के बाद ‘नीरा’ के पूरा जीवन बदल जाता है, शादी को लेकर की गई उसकी मधुरतम कल्पना विभिषिका बनकर छा जाती है। ‘उर्मिल जीवन’ इस कहानी में ‘नीरा’ के माध्यम से लेखक ने यह बताने की कोशिश की है कि जब एक स्त्री की इच्छा न होते हुए उसका विवाह किया जाता है तब एक स्त्री जीवन पर उसका क्या प्रभाव

पड़ता है ,और वह अपनी कल्पना से परे जीवन जीने पर मजबूर बनती है। समाज में आज भी कई ऐसी स्त्रियां होंगी जो खुद पर हो रहे शोषण पर आवाज नहीं उठाती, और 'नीरा' के समान चुपचाप सब कुछ सहन करती होंगी। 'एक स्त्री को स्त्री होने के कारण आज भी ऐसी कई विवशताओं का सामना करना पड़ता है। यहां तक कि शादी जैसे पवित्र बंधन में भी न चाहते हुए इच्छा के विरुद्ध रिश्ता निभाना पड़ता है।

**अपरिचित**

**पात्र -स्त्री**

'अपरिचित' कहानी की स्त्री अपने वैवाहिक जीवन में भरा-पूरा परिवार होने के बावजूद खुद को अकेला पाती है, वह खुद को अपरिचित के रूप में देखती है, उसे लगता है कि वह उन सब के बीच एक अजनबी है।'अपरिचित' की स्त्री वह पात्र है जो विवाह के बाद अपनी और अपने पति की पसंद में भिन्नता के कारण खुश नहीं रह पाती, उसे लगता है कि अपना चुनाव गलत है पर फिर भी अपने पति के प्रति समर्पण का भाव रखती है, और अपने रिश्ते को बचाए रखना चाहती है। उस रिश्ते में वह भले ही खुश न हो पर फिर भी उसे वह आजीवन निभाती रहती है। इस कहानी में चित्रित स्त्री पात्र और उसके पति के संबंधों में रिक्तता आती है, वह अपने आप को टूटा हुआ अनुभव करती है। 'अपरिचित' कहानी की स्त्री उन कई स्त्री पात्रों का प्रतिनिधित्व करती है जो अपने वैवाहिक जीवन में खुदको रुचि- वैभिन्न्य के कारण परिचितों में भी अजनबी और अपरिचित मानती है।

**खाली**

**पात्र- 'तोषी'**

'तोषी' इस कहानी की प्रमुख पात्र है। 'तोषी' और उसके पति के स्वभाव में अंतर होने के कारण दोनों अपने रिश्ते को रिक्त पाते है। शादी के आठ साल बाद भी उनके बीच जो पति पत्नी के रिश्ते में प्यार होना चाहिए वह प्यार नहीं होता है, वह जुड़ाव नहीं बन पाता है और इसलिए उनका जीवन तनावग्रस्त रहता है।'तोषी' एक मध्यवर्गीय कामकाजी स्त्री की भूमिका निभा रही है, जो केवल घर के कामों में व्यस्थ रहती है, घर के कामों में व्यस्त स्त्री का जीवन , उसका रहन सहन बहुत ही साधारण होता है और 'तोषी' का यही रहन सहन का तरीका उसके पति को पसंद नहीं होता है, उन दोनों की मानसिकता अलग है, उनकी पसंद भी अलग होती है। ओर जब एक रिश्ते में दोनों का स्वाभाव एक दूसरे से विपरित होता है तब दाम्पत्य जीवन ऊब और निरसता पूर्ण बनता है और 'तोषी' का जीवन भी इसी प्रकार बना दिखाई देता है।

**नन्हीं**

**पात्र –'नन्हीं' और 'नव'युवती''**

''नन्ही'' और नव'युवती' इस कहानी के मुख्य पात्र हैं। 'नन्हीं'एक छोटी बच्ची है जो अपनी मां की मृत्यू के बाद मां की तलाश में होती है। वही 'नव'युवती'' इस कहानी की दूसरी पात्र है जो अभी-अभी यौवन की अवस्था में आ चुकी थी, कि उसका विवाह किया जाता है, वह

भी एक अधेड़ उम्र के आदमी के साथ जिसकी वह दूसरी शादी होती है और उसकी एक बेटी भी होती है।''युवती'' शादी के बाद खुद को उस घर में अकेला पाती है, इसका कारण यह है कि उस घर में कोई भी उसकी ओर विशेष ध्यान नहीं देता है, न ही उस घर में उसे बहु को जो सम्मान मिलना चाहिए वह मिलता है। और इस वजह से उसका अकेलापन, उसका अंतर्द्वंद्व बढ़ता जाता है। उसके वैवाहिक जीवन इस कारण हमेशा तनाव ग्रस्त रहता है क्योंकि उसकी इच्छा के विरुद्ध उसका विवाह किया जाता है।

## संदर्भ सूची

### आधार ग्रंथ

1.सं.जयदेव तनेजा ,मोहन राकेश रचनावली,खण्ड 2,राधाकृष्ण प्रकाशन,नई दिल्ली ,2011

2.सं.जयदेव तनेजा ,मोहन राकेश रचनावली,खण्ड 5,राधाकृष्ण प्रकाशन,नई दिल्ली ,2011

# पंचम अध्याय

## निष्कर्ष

## निष्कर्ष

मोहन राकेश ने समाज में घटित यथार्थ को कहानी के रूप में उ'तारा 'है। मोहन राकेश ने मध्यवर्गीय परिवार में रहनेवाले पात्रों को अपनी कहानियों का मुख्य विषय बनाया है। मध्यवर्गीय समाज की समस्याएं उनके दुःख, पीड़ा, उदासी, निराशा इन सारी भावनाओं को,उनकी संवेदनाओं को उन्होंने अभिव्यक्ति दी है। उन्होंने व्यक्ति जीवन के निकट जाकर उनके अनुभवों को सूक्षमता से रेखांकित किया है। उन्होंने अपनी कहानियों के हर एक पात्र को महत्व दिया है। मोहन राकेश ने पुरातनता से आधुनिकता तक समाज की, समाज के बदलते परिवेश के साथ बदलता मानवीय जीवन, इनका अत्यंत सजीव चित्रण किया गया है।उनकी कहानियां व्यक्ति के आंतरिकता के विभिन्न पहलुओं को उद्घाटित करती हैं। व्यक्त का अकेलापन, ऊब, तनाव, घूटन, बिखराव आदि उनकी कहानियों में नज़र आता है, उदाहरण के लिए उनकी कहानी, 'एक और ज़िंदगी' , 'सुहागिनें', ''मिस पाल '' , 'अपरिचित', 'सीमाएं' , 'मरुस्थल'।

रचनाकर मोहन राकेश का जीवन संघर्षमय रहा है, उन्होंने अपने जीवन में जो भी अनुभव किए उसी की प्रवृत्तियाँ उनकी कहानियों में भी दिखाई देती हैं।मोहन राकेश की कहानियों के विषय अलग-अलग रहे हैं, जैसे भारत विभाजन की त्रासदी, स्त्री पुरुष संबंध, व्यक्ति का अंतर्द्वंद्व, अकेलापन, पारिवारिक विघटन और बदलते संबंध। स्त्री पुरुष संबंध जैसे उनका प्रिय विषय रहा हो। उनकी ज्यादतार कहानियों में स्त्री पुरुष संबंध, विघटन यह स्थितियां देखने को मिलती हैं।मोहन राकेश की कहानियों के विषय भले ही भिन्न भिन्न रहे हैं, परंतु उनकी कुछ कहानियां

ऐसी हैं जो स्त्री जीवन और उनकी समस्याओं का मार्मिक ओर सजीव चित्र प्रस्तुत करती हैं। उन्होंने अपनी कहानियों में स्त्री पात्र की समस्याओं को भी केंद्रीय विषय के रूप में रखा है। उनकी कई ऐसी कहानियां हैं जिनमें स्त्री पात्र की भूमिका, उनका संघर्ष मुख्य विषय रहा है। उनकी कहानियों में स्त्री पात्रों के अलग अलग रूप मिलते हैं। मोहन राकेश की कहानियां केवल समाज के किसी एक पक्ष से संबंधित नहीं है, उन्होंने मध्यवर्ग के साथ साथ शहरी जीवन जीने वाले पात्रों की भी समस्याओं को अपनी कहानियों का विषय बनाया है।

मोहन राकेश ने अपनी कहानियों में अपने परिवेश के पात्रों केजीवन में उत्पन्न समस्याओं को और नारी की विवशता को यथार्थ के साथ कहानी में उ'तारा 'है। उनकी कहानियों में शिक्षित स्त्री, ग्रामीण स्त्री, आधुनिक युगीन शहरीस्त्री, स्वाभिमानी, आर्थिक समस्याओं से झूंझती स्त्री तथा परिस्थितियों के आगे विवश स्त्री के स्वरूप मिलते हैं। उनकी विशेषता यह है कि उन्होंने केवल स्त्री के एक ही पक्ष पर बात नहीं की, न ही एक ही परिवेश को लेकर कहानियां लिखी, बल्कि उन्होंने हर तरह के स्त्री पात्र को अपनी कहानी में स्थान दिया है। उनकी कहानियों के विषय अलग अलग रहे हैं परंतु कहानी के कुछ पात्र ऐसे हैं जिनके जीवन में कई समस्याएं हैं जो समान रूप से देखी जा सकती है। जैसे उनकी कहानियों में अकेलापन, अंतर्द्वंद्व, निराशा, तनाव, आदि दिखाई देता है। इन परिस्थितियों का सामना करने वाले पात्र अलग हैं परंतु उनकी समस्याएं उनका अंतर्द्वंद्व एक समान है। उदा के लिए –''मिस पाल '', 'सुहागिनें', 'आखिरी सामान'।इन कहानियों के पात्र अपने जीवन से ऊब चुके हैं पर फिर भी संघर्ष करते दिखाई देते हैं। मोहन राकेश के पात्रों को

देखने पर यह स्पष्ट होता है कि स्त्री पात्रों के समान उनकी कहानियों में आए अन्य पात्र भी संघर्षरत हैं। मोहन राकेश ने जिन पात्रों की सृष्टि की है उसमें उन्हीं के जीवन यथार्थ के अंश परिलक्षित होते हैं। मोहन राकेश ने अपने जीवन में भोगा हुआ यथार्थ, अपनी वैवाहिक जीवन की त्रासदि इन स्थितियों का आधार लेकर अपने पात्रों की कहानी गढ़ी है। उदाहरण के लिए उनकी कहानी 'एक और ज़िंदगी' को ले सकते है। उनकी कथा पात्रों की उदासी भी उन्हीं के जीवन की उदासी है, उनके द्वारा रचे गए पात्रों के व्यक्तिव में मोहन राकेश के व्यक्तिव की सी झलक मिलती है।

मोहन राकेश की संवेदनशीलता उनकी कहानियों का एक मुख्य बिंदु रहा है। इसी संवदेनशीलता के कारण वे अपने आसपास के परिवेश से जुड़ पाते है और उनकी संवेदनाओं को पहचान सकते है। तत्कालीन परिवेश ने भी राकेश की कहानियों को प्रभावित किया है। उन्होंने अपने आसपास के परिवेश को लेकर, युगीन समाज की परिस्थितियों को पकड़कर अनेक रूपों में अपनी कहानियों में उभारा है। उनकी कहानियां मानव जीवन के यथार्थ से जुड़ी हुई होने के कारण पाठक के मन पर व्यापक प्रभाव छोड़ जाती हैं। भारत विभाजन का व्यक्ति जीवन के मूल्यों पर व्यापक प्रभाव रहा है, विभाजन के बाद औध्योगीकीकरण, स्त्री शिक्षा के प्रति जागरूकता, संयुक्त परिवार का पतन जैसे समाज में कई बदलाव हुए और मोहन राकेश ने अपनी कहानियों में इन सभी विषयों को स्थान दिया है। इससे स्पष्ट होता है कि मोहन राकेश की कहानियां यथार्थ के धरातल पर आधारित है। उन्होंने कई कहानियां लिखी हैं, उनकी हर कहानी का पात्र चयन भी उन्होंने परिस्थिति और कथावस्तु के अनुकूल किया है। मोहन राकेश की सभी कथाएं आज भी

प्रासंगिक और सार्थक ठहरती हैं। उदाहरण के लिए उनके द्वारा लिखित स्त्री की समस्याओं पर कहानियां।

मोहन राकेश की इन कहानियों की प्रासंगिकता पर विचार किया जाए तो, उन्होंने अपनी कहानियों में जो भी पात्र लिए है,उनका चुनाव काफ़ी सटीक है। उनकी कहानियों में अकेलेपन,अंतर्द्वंद्व, खालीपन, कुंठा, आर्थिक स्थिति के कारण स्त्री की विवशता उनकी मजबूरियां इन सभी परिस्थितियों को लिया गया है उन्हें समाज के सम्मुख लाने का प्रयास किया है। इन स्त्री पात्रों को उन्होंने अपने परिवेश की सच्चाई से लिया है। उनकी कहानियों के पात्र अपने जीवन में संघर्षरत तो हैं, पर अपनी स्थिति के कारण उनकी इच्छाएं कुंठित हो जाती है, उनका केवल बाहरी संघर्ष दिखाई देता है परंतु उनका अंतःसंघर्ष उनके कुंठा का कारण बनता है। मोहन राकेश की कहानियों के पात्रों के बारे में कहा जा सकता है कि उनके पात्र जीवन के अनुभवों के दस्तावेज हैं जिन्हें उन्होंने ईमानदारी से अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया है। उनकी यही प्रवृत्तियां उनकी कहानियों को प्रभावशाली  बनाती हैं।

# संदर्भ सूची

## संदर्भ सूची


1. डॉ० कैलाश जोशी, डॉ० गोरधनसिंह शेखावत, अज्ञेय, धर्मवीर भारती और मोहन राकेश की कथा- यात्रा, चिन्मय प्रकाशन, जयपुर,1986

2. डॉ० गोरधनसिंह शेखावत, नई कहानी: उपलब्धि और सीमाएं, रामा पब्लिशिंग हाउस, जयपुर

3. सं०जयदेव तनेजा, मोहन राकेश रचनावली खण्ड दो, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली,2011

4. सं. जयदेव तनेजा, मोहन राकेश रचनावली खण्ड पाँच, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली,2011

5. प्रतिभा अगरवाल, भारतीय साहित्य के निर्माता मोहन राकेश, साहित्य अकादमी, प्र. संस्करण-1987, पुनःमुद्रण:1988,1992,1999,2009,2011,2014 एवं 2016

6. डॉ० श्रीमती मीना पिंपलापुरे, मोहन राकेश का नारी-संसार, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली,1987,

7. डॉ० लक्ष्मी शर्मा, मोहन राकेश के साहित्य में पात्र-सरंचना पंचशील प्रकाशन, जयपुर,2003,

8. डॉ.सुषमा अग्रवाल, मोहन राकेश व्यक्तित्व और कृतित्व,पंचशील प्रकाशन,1986

9. हेमलता, नई कहानी की सरंचना , वंदना बुक एजेंसी (किताबघर प्रकाशन का उपक्रम), प्रीत विहार, दिल्ली,2013

**अंतरजाल**

10. अजय कुमार सिंह, इवनिंग कॉलेज , मोहन राकेश की कहानियाँ- एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

https://www.jetir.org/papers/JETIR2011124.pdf

11. डॉ०ज्योत्सना, कहानीकार मोहन राकेश की कहानियों में चित्रित स्त्री, किशन लाल पब्लिक कॉलेज, रेवाड़ी (हरियाणा)

12. के. फूल्लोना देवी (पी०एच०डी थिसिस) हिंदी नई कहानी के परिप्रेक्ष्य में मोहन राकेश की कहानियों का अध्ययन, मणिपुर विश्वविद्यालय,2009

13. रूपम पाठक, (पी०एच०डी थिसिस) मोहन राकेश के कथा साहित्य का मनोवैज्ञानिक अध्ययन, लखनऊ विश्वविद्यालय, 2017

14. प्रा० रावसाहेब मोहनराव जाधव (पी. एच. डी थिसिस )मोहन राकेश की कहानियों में नारी चरित्रों की मूल संवेदना, स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, नांदेड़ , जून 2001

15. वैजन पॉल, (पी०एच०डी थिसिस) मोहनराकेश कीरचनाओंमें आधुनिकप्रवृत्तियां:एकअध्ययन, महात्मा गांधी यूनिवर्सिटी,1993

16. https://timesofindia.indiatimes.com/readersblog/lawpedia/status-of-women-in-india-51422/

17. https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/150018

18. http://shodhvarta.in/index.php/SVJ/article/view/31/31

19. गूगलस्कॉलर https://g.co/kgs/5TXeP5

20.https://m.bharatdiscovery.org/india/%E0%A4%AE%E0%A5%8B%E0%A4%B9%E0%A4%

A8_%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%95%E0%A5%87%E0%A4%B6

21. https://groups.google.com/g/roz-ek-sher/c/RT6G_MZW2kI?pli=1

22. https://mycoaching.in/mohan-rakesh

23. https://leverageedu.com/blog/hi/mohan-rakesh-ka-jivan-parichay/